॥ विष्णु स्तोत्राणि एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

विष्णु स्तोत्राणि

1. विष्णु मंत्र 02
2. चतु:श्लोकी भागवत 03
3. नारायणास्त्रम् 04
4. नारायण कवचम् 06
5. नारायण स्तोत्रम् 11
6. नृसिंह कवचम् 12
7. लक्ष्मी नारायण कवचम् 14
8. विष्णु पंजर स्तोत्रम् 16
9. विष्णु पंजर स्तोत्रम् (इंन्द्र-नारद) 17
10. सुदर्शन कवचम् 18

अष्टोत्तरशत / सहस्त्रनाम

11. विष्णु अष्टोत्तरशत नामावली 22
12. नारसिंह अष्टोत्तरशत नामावली 23
13. विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रम् 24
14. विष्णु सहस्त्र नामावली 32

आरती

15. जगदीश जी की आरती 42
16. नरसिंह जी की आरती 43
17. भागवत पुराण जी की आरती 44
18. सत्यनारायण जी की आरती 45
19.

शास्त्रों के अनुसार प्रतिदिन भगवान विष्णु के मंत्र का जाप करना विशेष फलदायी रहता है। विशेषकर वैशाख, कार्तिक और श्रावण में विष्णु आराधना बहुत महत्वपूर्ण मानी गई है। श्रीहरि विष्णु का स्वरूप शांत और आनंदमयी है। वे जगत का पालन करने वाले देवता हैं। नियमित भगवान विष्णु का स्मरण करने से जीवन के समस्त संकटों का नाश होता है तथा धन-वैभव की प्राप्ति होती है।

- **विष्णु के प्रमुख मंत्र** — **ॐ नमो: नारायणाय।**
  - **ॐ नारायणाय नम:।**
  - **श्री मन नारायण नारायण हरि हरि।**
  - **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**
  - **ॐ विष्णवे नम:।**
  - **ॐ हूं विष्णवे नम:।**
  - **ॐ अं वासुदेवाय नम:।**
  - **ॐ आं संकर्षणाय नम:।**
  - **ॐ अं प्रद्युम्नाय नम:।**
  - **ॐ अ: अनिरुद्धाय नम:।**

- **विष्णु गायत्री मंत्र** — **ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु प्रचोदयात्॥**

- **लक्ष्मी विनायक मंत्र** — **दन्ताभये चक्र दरो दधानं, कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।**
  धृताब्जया लिंगितमब्धिपुत्रया, लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे॥

- **धन-वैभव एवं संपन्नता का मंत्र** — **ॐ भूरिदा भूरि देहिनो, मा दभ्रं भूर्या भर। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि।**
  ॐ भूरिदा त्यसि श्रुत: पुरूत्रा शूर वृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि।

- **विष्णु के पंचरूप मंत्र** — **ॐ ह्रीं कार्तवियार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्त्रवान।**
  यस्य स्मरेण मात्रेण ह्रतं नष्टं च लभ्यते॥

॥ चतुः श्लोकी भागवत ॥

- **श्रीभगवानुवाच** ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् ।
  सरहस्यं तदंग च गृहाण गदितं मया ॥ ॥ १॥

- यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मक:।
  तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥ ॥ २॥

- अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परम् ।
  पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ ॥ ३॥

- ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
  तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तम: ॥ ॥ ४॥

- यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
  प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥ ॥ ५॥

- एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनात्मन: ।
  अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ॥ ६॥

- एतन्मत् समातिष्ठ परमेण समाधिना ।
  भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ॥ ७॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे अष्टादश साहस्त्रयां संहितायां वैयासिक्यां द्वितीयस्कन्धे भगवद् ब्रह्मसंवादे चतु:श्लोकी भागवतं समाप्तम् ॥

।। नारायणास्त्रम् ।।

हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः । ऐकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय । चतुर शिति वाता नष्टा दश कुष्ठान् अष्टादश क्षय रोगान् हन हन । सर्वदोषान् भंजय भंजय । तत्सर्वान् नाशय नाशय । शोषय शोषय । आकर्षय आकर्षय । शत्रून् मारय मारय । उच्चाटयोच्चाटय । विव्देषय विव्देषय । स्तंभय स्तंभय । निवारय निवारय । विघ्नैर्हन हन दह दह मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय । चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय चतुरः शीतानि विस्फोटय विस्फोटय । अर्शोवात शूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र व्दिपद चतुष्पद पदे बाह्यदिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्यानपि कांश्चित् तद्व्देषकान् सर्वान् हन हन । विद्युन् मेघ नदी पर्वता टवी सर्वस्थान रात्रि दिन पन्था चौरान् वशं कुरु कुरु । हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठ ठ ठ ठ हृदयादत्ता ।।

- **महात्म्य विधानम्**

एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते ।
असुराञ्जितवान्सर्वाञ्छ क्रस्तु बलदानवान् ।। ।। १।।

- यः पुमान्पठते भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना ।
  तस्य सर्वाणि सिद्धयन्ति यच्च दृष्टिगतं विषम् ।। २।।
- अन्यदेहविषं चैव न देहे संक्रमेद्ध्रुवम् ।
  संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयते क्षणात् ।। ।। ३।।
- अतः सद्यो जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते ।
  किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसंपदः ।। ।। ४।।
- लभते नात्र संदेहो नान्यथा तु भवेदिति ।
  गृहीतो यदि वा येन बलिना विविधैरपि ।। ।। ५।।
- शतिं समुष्णतां याति चोष्णं शीतलतां व्रजेत् ।
  अन्यथां न भवेद्विद्यां यः पठेत्कथितां मया ।। ।। ६।।

- भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गोरोचनजलेन च ।
  इमां विद्यां स्वके बद्धा सर्वरक्षां करोतु मे ॥ ॥ ७॥
- पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्धा विचेक्षणः ।
  विद्रवंति हि विघ्नाश्च न भवंति कदाचनः ॥ ॥ ८॥
- न भयं तस्य कुर्वंति गगने भास्करादयः ।
  भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रामग्राही तु डाकिनी ॥ ॥ ९॥
- शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः ।
  राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा बलिनो हि ये ॥ ॥१०॥
- असुराश्च सुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता ।
  सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठेन्मन्त्रोच्चारणमात्रतः॥ ॥११॥
- सर्वहत्याः प्रणश्यंति सर्व फलानि नित्यशः ।
  सर्वे रोगा विनश्यंति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥ ॥१२॥
- उच्चाटनेऽपराह्णे तु संध्यायां मारणे तथा ।
  शान्तिके चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्वकामिकः ॥ ॥१३॥
- इदं मन्त्ररहस्यं च नारायणास्त्रमेव च । त्रि
  कालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥ ॥१४॥
- आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमः ।
  चिंतितार्थ सुखप्राप्तिं लभते नात्र संशयः ॥ ॥१५॥

॥ इति नारायणास्त्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ नारायण कवचम् ॥

- **अङ्गन्यास:**
  - **ॐ ॐ नम: पादयो** तर्जनी-अंगुष्ठ से दोनों पैरों का स्पर्श करें।
  - **ॐ नं नम: जानुनो:** तर्जनी-अंगुष्ठ से दोनों घुटनों का स्पर्श करें।
  - **ॐ मों नम: ऊर्वो:** तर्जनी-अंगुष्ठ से दोनों पैरों की जाँघ का स्पर्श करें।
  - **ॐ नां नम: उदरे** तर्जनी-अंगुष्ठ से पेट का स्पर्श करें।
  - **ॐ रां नम: हृदि** मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से हृदय का स्पर्श करें।
  - **ॐ यं नम: उरसि** मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से छाती का स्पर्श करें।
  - **ॐ णां नम: मुखे** तर्जनी-अँगुठे के अंयोग से मुख का स्पर्श करें।
  - **ॐ यं नम: शिरसि** तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करें।

- **करन्यास:**
  - **ॐ ॐ नम: दक्षिणतर्जन्याम्** दाहिने अँगुठे से तर्जनी के ऊपर वाले सिरे का स्पर्श करें।
  - **ॐ नं नम: दक्षिणमध्यमायाम्** दाहिने अँगुठे से मध्यमा का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ मों नम: दक्षिणानामिकायाम्** दाहिने अँगुठे से अनामिका का ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ भं नम: दक्षिणकनिष्ठिकायाम्** दाहिने अँगुठे से कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ गं नम: वामकनिष्ठिकायाम्** बाँये अँगुठे से कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ वं नम: वामानामिकायाम्** बाँये अँगुठे से अनामिका का ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ तें नम: वाममध्यमायाम्** बाँये अँगुठे से मध्यमा का ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ वां नम: वामतर्जन्याम्** बाँये अँगुठे से तर्जनी का ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ सुं नम: दक्षिणांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि** दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से अँगुठे का ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ दें नम: दक्षिणांगुष्ठाय पर्वणि** दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से अँगुठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ वां नम: वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि** बाँये हाथ की चारों अँगुलियों से अँगुठे के ऊपरवाला पोर स्पर्श करें।
  - **ॐ यं नम: वामांगुष्ठाय पर्वणि** बाँये हाथ की चारों अँगुलियों सेअँगुठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करें।

- **विष्णुषडक्षरन्यास:**
  - **ॐ ॐ नम: हृदये** तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करें।
  - **ॐ विं नम: मूर्धनि** तर्जनी, मध्यमा के संयोग सिर का स्पर्श करें।
  - **ॐ षं नम: भ्रुवोर्मध्ये** तर्जनी, मध्यमा से दोनों भौंहों का स्पर्श करें।
  - **ॐ णं नम: शिखायाम्** अँगुठे से सिखा का स्पर्श करें।
  - **ॐ वें नम: नेत्रयो:** तर्जनी, मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।

- **ॐ नं नमः सर्वसन्धिषु** तर्जनी, मध्यमा, अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों को स्पर्श करें।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम्** पूर्व की ओर चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेय्याम्** अग्निकोण में चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम्** दक्षिण की ओर चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् नैऋत्ये** नैऋत्य कोण में चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम्** पश्चिम की ओर चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये** वायुकोण में चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम्** उत्तर की ओर चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम्** ईशानकोण में चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम्** ऊपर की ओर चुटकी बजाएँ।
- **ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम्** नीचे की ओर चुटकी बजाएँ॥

अथ श्रीनारायण कवचम्

- **राजोवाच**

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥ ॥ १॥

- **भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।**
यथाऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥ ॥ २॥

- **श्रीशुक उवाच**

वृतः पुरोहितोस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु॥ ॥ ३॥

- **विश्वरूप उवाच**

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ् मुखः।
कृतस्वाङ्ग करन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥ ॥ ४॥

- **नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।**
पादयोर्जानुनोरूर्वोरूदरे हृद्यथोरसि॥ ॥ ५॥

- **मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।**
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥ ॥ ६॥

- **करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षर विद्यया।**
प्रणवादियकारन्त मङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु॥ ॥ ७॥

- **न्यसेद् हृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।**
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्॥ ॥ ८॥

- वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान् नकारं सर्वसन्धिषु ।
  मकार मस्त्र मुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ॥ ॥ ९॥
- सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् ।
  ॐ विष्णवे नम इति ॥ ॥१०॥
- आत्मानं परमं ध्यायेद ध्येयं षट्शक्ति भिर्युतम् ।
  विद्या तेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्र मुदाहरेत ॥ ॥११॥
- ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां, न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
  दरारिचर्मासिगदेषुचा, पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ ॥१२॥
- जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति, र्यादोगणेभ्यो वरूणस्य पाशात् ।
  स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्, त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥१३॥
- दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः, पायान्नृसिंहोऽसुरयुथपारिः ।
  विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं, दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥ ॥१४॥
- रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः, स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
  रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे, सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥१५॥
- मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा, न्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
  दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः, पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥१६॥
- सनत्कुमारो वतु कामदेवा, द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
  देवर्षिवर्यः पुरूषार्चनान्तरात्, कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥ ॥१७॥
- धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्, द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
  यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्, बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥१८॥
- द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्, बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
  कल्किः कले कालमलात् प्रपातु, धर्मावनायोरूकृतावतारः॥ ॥१९॥
- मां केशवो गदया प्रातरव्याद्, गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः ।
  नारायण प्राह्ण उदात्तशक्ति, र्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ ॥२०॥
- देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा, सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
  दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे, निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ ॥२१॥

- श्रीवत्सधामापररात्र ईशः, प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।
  दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते, विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥
- चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि, भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
  दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु, कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥ ॥२३॥
- गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे, निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्य जित प्रियासि ।
  कूष्माण्ड वैनायक यक्षरक्षो, भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥ ॥२४॥
- त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ, पिशाच विप्र ग्रहघोर दृष्टीन् ।
  दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो, भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥२५॥
- त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य, मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
  चर्मञ्छतचन्द्र छादय, द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥ ॥२६॥
- यन्नो भयं ग्रहेभ्यो भूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
  सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ॥ ॥२७॥
- सर्वाण्येतानि भगन्नामरूपास्त्र कीर्तनात् ।
  प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥ ॥२८॥
- गरूड़ो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
  रक्षत्वशेष कृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ॥ ॥२९॥
- सर्वापद्भ्यो हरेर्नाम रूपयानायुधानि नः ।
  बुद्धिन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥ ॥३०॥
- यथा हि भगवानेव वस्तुतः सद्सच्च यत् ।
  सत्यनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपाद्रवाः ॥ ॥३१॥
- यथैकात्म्यानु भावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
  भूषणा युद्ध लिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ॥ ॥३२॥
- तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
  पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥ ॥३३॥
- विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता, दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।
  प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन, स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ॥३४॥

- मघवन् निदमाख्यातं वर्म नारयणात्मकम् ।
  विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ॥ ॥३५॥
- एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा ।
  पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥ ॥३६॥
- न कुतश्चित भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
  राजदस्यु ग्रहा दिभ्यो व्याघ्रा दिभ्यश्च कर्हिचित् ॥ ॥३७॥
- इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः ।
  योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरूधन्वनि ॥ ॥३८॥
- तस्योपरि विमानेन गन्धर्व पतिरेकदा ।
  ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः ॥ ॥३९॥
- गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक् शिराः ।
  स वाल खिल्य वचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
  प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥ ॥४०॥

- **श्रीशुक उवाच** य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः ।
  तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ ॥४१॥
- एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।
  त्रैलोक्य लक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्यऽ मृधेसुरान् ॥ ॥४२॥

॥ इति श्रीनारायण कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ नारायण स्तोत्रम् ॥

नारायण नारायण जय गोविन्द हरे ॥
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ ध्रु ॥

करुणापारावार वरुणालयगम्भीर ॥ ॥ १॥
नारायण नारायण ..... ।

घननीरदसङ्काश कृतकलिकल्मषनाश ॥ २॥
नारायण नारायण ..... ।

यमुनातीरविहार धृतकौस्तुभमणिहार ॥ ॥ ३॥
नारायण नारायण ..... ।

पीताम्बरपरिधान सुरकल्याणनिधान ॥ ॥ ४॥
नारायण नारायण ..... ।

मञ्जुलगुञ्जाभूष मायामानुषवेष ॥ ॥ ५॥
नारायण नारायण ..... ।

राधाधरमधुरसिक रजनीकरकुलतिलक ॥ ६॥
नारायण नारायण ..... ।

मुरलीगानविनोद वेदस्तुतभूपाद ॥ ॥ ७॥
नारायण नारायण ..... ।

बर्हिनिबर्हापीड नटनाटकफणिक्रीड ॥ ॥ ८॥
नारायण नारायण ..... ।

वारिजभूषाभरण राजिवरुक्मिणीरमण ॥ ९॥
नारायण नारायण ..... ।

जलरुहदलनिभनेत्र जगदारम्भकसूत्र ॥ ॥१०॥
नारायण नारायण ..... ।

पातकरजनीसंहर करुणालय मामुद्धर ॥ ॥११॥
नारायण नारायण ..... ।

अघबकक्षयकंसारे केशव कृष्ण मुरारे ॥ ॥१२॥
नारायण नारायण ..... ।

हाटकनिभपीताम्बर अभयं कुरु मे मावर ॥१३॥
नारायण नारायण ..... ।

दशरथराजकुमार दानवमदसंहार ॥ ॥१४॥
नारायण नारायण ..... ।

गोवर्धनगिरिरमण गोपीमानसहरण ॥ ॥१५॥
नारायण नारायण ..... ।

शरयूतीरविहार सज्जनऋषिमन्दार ॥ ॥१६॥
नारायण नारायण ..... ।

विश्वामित्रमखत्र विविधपरासुचरित्र ॥ ॥१७॥
नारायण नारायण ..... ।

ध्वजवज्राङ्कुशपाद धरणीसुतसहमोद ॥ ॥१८॥
नारायण नारायण ..... ।

जनकसुताप्रतिपाल जय जय संसृतिलील ॥१९॥
नारायण नारायण ..... ।

दशरथवाग्धृतिभार दण्डकवनसञ्चार ॥ ॥२०॥
नारायण नारायण ..... ।

मुष्टिकचाणूरसंहार मुनिमानसविहार ॥ ॥२१॥
नारायण नारायण ..... ।

वालिविनिग्रहशौर्य वरसुग्रीवहितार्य ॥ ॥२२॥
नारायण नारायण ..... ।

मां मुरलीकर धीवर पालय पालय श्रीधर ॥२३॥
नारायण नारायण ..... ।

जलनिधिबन्धनधीर रावणकण्ठविदार ॥ ॥२४॥
नारायण नारायण ..... ।

ताटीमददलनाढ्य नटगुणविविधधनाढ्य ॥२५॥
नारायण नारायण ..... ।

गौतमपत्नीपूजन करुणाघनावलोकन ॥ ॥२६॥
नारायण नारायण ..... ।

सम्भ्रमसीताहार साकेतपुरविहार ॥ ॥२७॥
नारायण नारायण ..... ।

अचलोद्धृतिचञ्चत्कर भक्तानुग्रहतत्पर ॥२८॥
नारायण नारायण ..... ।

नैगमगानविनोद रक्षःसुतप्रह्लाद ॥ ॥२९॥
नारायण नारायण ..... ।

भारतीयतिवरशङ्कर नामामृतमखिलान्तर ॥३०॥
नारायण नारायण ..... ।

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं नारायण स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री नृसिंह कवचम् ॥

- शत्रुबाधा निवारण हेतु नृसिंह कवच पाठ का प्रयोग करें।
- इस कवच का पाठ करने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का 108 बार जप करें - **जय जय श्रीनृसिंह।**
- अन्त में श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए। ऐसा प्रतिदिन करें। चालीस दिनों के पश्चात् आपको इसका प्रभाव स्वतः दिखने लगेगा। यह अनुभवसिद्ध प्रयोग है।

- **विनियोगः** ॐ अस्य श्रीनृसिंह कवच मन्त्रस्य। प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्रीश्छन्दः। नृसिंह देवता। क्षौं बीजं। मम सर्वारिष्ट च शत्रुक्षयाय पूर्वकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

- **ध्यानम्** **श्रीमन्नृ-केसरि-तनो जगदेक-बन्धो श्री-नीलकण्ठ-करुणार्णव-सामराज। वह्नीन्दु - तीव्र -कर-नेत्र-पिनाक – पाणे-शीतांशु-शेखर रमेश्वर पाहि विष्णो॥**

नारद उवाच
इन्द्रादिदेव वृन्देश तातेश्वर जगत्पते।
महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रुहि मे प्रभो
यस्य प्रपठनाद् विद्वान् त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥ १॥

ब्रह्मोवाच
शृणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोघन।
कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयाभिधम्॥ २॥

यस्य प्रपठनाद् वाग्मी त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
स्रष्टाऽहं जगतां वत्स पठनाद्धारणाद् यतः॥ ३॥

लक्ष्मीर्जगत्त्रयम् पाति संहर्ता च महेश्वरः।
पठनाद्धारणाद्देवा बभुवुश्च दिगीश्वराः॥ ४॥

ब्रह्म मन्त्रमयं वक्ष्ये भूतादिविनिवारकम्।
यस्य प्रसादादुर्वासास्त्रैलोक्यविजयी मुनिः।
पठनाद् धारणाद् यस्य शास्ता च क्रोधभैरवः॥ ५॥

त्रैलोक्यविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री नृसिंह देवता विभुः।
चतुर्वर्गे च शान्तौ च विनियोगः प्रकीर्त्तितः॥६॥

क्षौं बिजं मे शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः।
उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तः सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्युं नमाम्यहम्॥ ७॥

द्वात्रिंशादक्षरो मन्त्रः मन्त्रराजः सुरद्रुमः।
कण्ठं पातु ध्रुवम् क्षौं हृद्भगवते चक्षुषी मम॥ ८॥

नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु मस्तकम्।
दीप्तदंष्ट्राय च तथाग्निनेत्राय च नासिकाम्॥ ९॥

सर्वरक्षोघ्नाय देवाय सर्वभूतविनाशाय च।
सर्वज्वरविनाशाय दह दह पच द्वयम्॥ १०॥

रक्ष रक्ष सर्वमन्त्रम् स्वाहा पातु मुखं मम।
तारादि रामचन्द्राय नमः पायाद्गूह्यं मम॥ ११॥

क्लीं पायात्पाणियुग्मंश्च तक्रम् नमः पदम् ततः।
नरायणाऽप्रसवम् च आं ह्रीं क्रौं क्षौं चं हुं फट्॥ १२॥

षडक्षरः कटिं पातु ॐ नमो भगवते पदम्।
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय उरुद्वयम्॥ १३॥

क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः ।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः पायात्पदद्वयम् ॥१४॥

क्षौं नरसिंहाय क्षौंश्च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ॥ १५॥

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघ विग्रहम् ।
तवस्नेहान्मया ख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥१६॥

फल-श्रुति

गुरुपूजा विधायाथ गृहणीयात् कवचं ततः ।
सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत् ॥ १७॥

शतमष्टोत्तरं चैव पुरश्चर्याविधि स्मृतः ।
हवनादीन् दशांशेन कृत्वा साधकसत्तमः ॥ १८॥

ततस्तु सिद्ध कवचः पुण्यात्मा मदनोपमः ।
स्पर्द्धामुद्धय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत् ततः ॥ १९॥

पुष्पाञ्जल्याष्टकम् दत्वामूले नैव पठेत् सकृत् ।
अपि वर्षसहस्राणाम् पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥२०॥

भूर्जे विलिख्य गुटिकाम् स्वर्णस्थाम् धारयेत् यदि ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ नरसिंहो भवेत् स्वयम् ॥२१॥

योषिद्वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे करे ।
विभृयात् कवचं पुण्यम् सर्वसिद्धियुतो भवेत् ॥२२॥

काकबन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ।
जन्मबन्ध्या नष्टपुत्रा बहुपुत्रवती भवेत् ॥ २३॥

कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।
त्रैलोक्य क्षोभयत्येव त्रैलोक्यं विजयी भवेत् ॥ २४॥

भूतप्रेतपिशाचाश्च राक्षसा दानवश्च ये ।
तं दृष्ट्वा प्रपलायन्ते देशाद्देशान्तरं ध्रुवम् ॥ २५॥

यस्मिन् गेहे च कवचं ग्रामे वा यदि तिष्ठति ।
तं देशन्तु परित्यज प्रयान्ति चाति दूरतः ॥ २६॥

॥ इति श्रीब्रह्म संहितायां सप्तदशाध्याये त्रैलोक्यविजयं नाम श्रीनृसिंह कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री लक्ष्मीनारायण कवचम् ॥

श्री भैरव उवाच

अधुना देवि वक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते।
कवचं मन्त्रगर्भं च वज्रपञ्जरकाख्यया ॥ १॥

श्रीवज्रपञ्जरं नाम कवचं परमाद्भुतम्।
रहस्यं सर्वदेवानां साधकानां विशेषतः ॥ २॥

यं धृत्वा भगवान् देवः प्रसीदति परः पुमान्।
यस्य धारणमात्रेण ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ३॥

ईश्वरोऽहं शिवो भीमो वासवोऽपि दिवस्पतिः।
सूर्यस्तेजोनिधिर्देवि चन्द्रमास्तारकेश्वरः ॥ ४॥

वायुश्च बलवांल्लोके वरुणो यादसाम्पतिः।
कुबेरोऽपि धनाध्यक्षो धर्मराजो यमः स्मृतः ॥ ५॥

यं धृत्वा सहसा विष्णुः संहरिष्यति दानवान्।
जघान रावणादींश्च किं वक्ष्येऽहमतः परम् ॥ ६॥

कवचस्यास्य सुभगे कथितोऽयं मुनिः शिवः।
त्रिष्टुप् छन्दो देवता च लक्ष्मीनारायणो मतः ॥ ७॥

रमा बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोग इति स्मृतः ॥ ८॥

- **विनियोग** ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणकवचस्य। शिवः ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। श्रीलक्ष्मीनारायण देवता। श्रीं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ कीलकं। भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

- **ध्यानम्** पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम्।
लक्ष्म्या श्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥ ९॥

कवचम्

ॐ वासुदेवोऽवतु मे मस्तकं सशिरोरुहम्।
ह्रीं ललाटं सदा पातु लक्ष्मीविष्णुः समन्ततः ॥१०॥

ह्सौः नेत्रेऽवताल्लक्ष्मीगोविन्दो जगतां पतिः।
ह्रीं नासां सर्वदा पातु लक्ष्मीदामोदरः प्रभुः ॥ ११॥

श्रीं मुखं सततं पातु देवो लक्ष्मीत्रिविक्रमः।
लक्ष्मी कण्ठं सदा पातु देवो लक्ष्मीजनार्दनः ॥ १२॥

नारायणाय बाहू मे पातु लक्ष्मीगदाग्रजः।
नमः पार्श्वौ सदा पातु लक्ष्मीनन्दैकनन्दनः ॥ १३॥

अं आं इं ईं पातु वक्षो ॐ लक्ष्मीत्रिपुरेश्वरः।
उं ऊं ऋं ॠं पातु कुक्षिं ह्रीं लक्ष्मीगरुडध्वजः ॥ १४॥

लृं लॄं एं ऐं पातु पृष्ठं ह्सौः लक्ष्मीनृसिंहकः।
ओं औं अं अः पातु नाभिं ह्रीं लक्ष्मीविष्टरश्रवः ॥ १५॥

कं खं गं घं गुदं पातु श्रीं लक्ष्मीकैटभान्तकः।
चं छं जं झं पातु शिश्नं लक्ष्मी लक्ष्मीश्वरः प्रभुः ॥१६॥

टं ठं डं ढं कटिं पातु नारायणाय नायकः।
तं थं दं धं पातु चोरू नमो लक्ष्मीजगत्पतिः ॥ १७॥

पं फं बं भं पातु जानू ॐ ह्रीं लक्ष्मीचतुर्भुजः।
यं रं लं वं पातु जङ्घे ह्सौः लक्ष्मीगदाधरः ॥ १८॥

शं षं सं हं पातु गुल्फौ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीरथाङ्गभृत् ।
ळं क्षः पादौ सदा पातु मूलं लक्ष्मीसहस्रपात् ॥१९॥

ङं ञं णं नं मं मे पातु लक्ष्मीशः सकलं वपुः ।
इन्द्रो मां पूर्वतः पातु वह्निर्वह्नौ सदावतु ॥ २०॥

यमो मां दक्षिणे पातु नैरृत्यां निरृतिश्च माम् ।
वरुणः पश्चिमेऽव्यान्मां वायव्येऽवतु मां मरुत् ॥२१॥

उत्तरे धनदः पायादैशान्यामीश्वरोऽवतु ।
वज्रशक्तिदण्डखड्ग पाशयष्टिध्वजाङ्किताः ॥२२॥

सशूलाः सर्वदा पान्तु दिगीशाः परमार्थदाः ।
अनन्तः पात्वधो नित्यमूर्ध्वे ब्रह्मावताच्च माम् ॥२३॥

दशदिक्षु सदा पातु लक्ष्मीनारायणः प्रभुः ।
प्रभाते पातु मां विष्णुर्मध्याह्ने वासुदेवकः ॥ २४॥

दामोदरोऽवतात् सायं निशादौ नरसिंहकः ।
सङ्कर्षणोऽर्धरात्रेऽव्यात् प्रभातेऽव्यात् त्रिविक्रमः ॥२५॥

अनिरुद्धः सर्वकालं विश्वक्सेनश्च सर्वतः ।
रणे राजकुले द्युते विवादे शत्रुसङ्कटे
ॐ ह्रीं ह्सौः ह्रीं श्रीं मूलं लक्ष्मीनारायणोऽवतु ॥२६॥

ॐॐॐरणराजचौररिपुतः पायाच्च मां केशवः
ह्रींह्रींह्रींहह्हाह्सौः ह्सह्सौः वह्नेर्वतान्माधवः ।
ह्रींह्रींह्रींजलपर्वताग्निभयतः पायादनन्तो विभुः
श्रींश्रींश्रींशशशालं प्रतिदिनं लक्ष्मीधवः पातु माम् ॥२७॥

इतीदं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम् ।
लक्ष्मीनारायणस्येष्टं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ २८॥

सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वसारस्वतप्रदम् ।
लक्ष्मीसंवननं तत्वं परमार्थरसायनम् ॥ २९॥

मन्त्रगर्भं जगत्सारं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ।
दशवारं पठेद्रात्रौ रतान्ते वैष्णवोत्तमः ॥ ३०॥

स्वप्ने वरप्रदं पश्येल्लक्ष्मीनारायणं सुधीः ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं कवचं मन्मुखोदितम् ॥ ३१॥

स याति परमं धाम वैष्णवं वैष्णवेश्वरः ।
महाचीनपदस्थोऽपि यः पठेदात्मचिन्तकः ॥ ३२॥

आनन्दपूरितस्तूर्णं लभेद् मोक्षं स साधकः ।
गन्धाष्टकेन विलिखेद्रवौ भूर्जे जपन्मनुम् ॥ ३३॥

पीतसूत्रेण संवेष्ट्य सौवर्णेनाथ वेष्टयेत् ।
धारयेद्गुटिकां मूर्ध्नि लक्ष्मीनारायणं स्मरन् ॥ ३४॥

रणे रिपुन् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥३५॥

सा बध्नीयान् कण्ठदेशे लभेत् पुत्रांश्चिरायुषः ।
गुरुपदेशतो धृत्वा गुरुं ध्यात्वा मनुं जपन् ॥ ३६॥

वर्णलक्षपुरश्चर्या फलमाप्नोति साधकः ।
बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य पार्वति ॥ ३७॥

विनानेन न सिद्धिः स्यान्मन्त्रस्यास्य महेश्वरि ।
सर्वागमरहस्याढ्यं तत्वात् तत्वं परात् परम् ॥ ३८॥

अभक्ताय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने ।
दीक्षिताय कुलीनाय स्वशिष्याय महात्मने ॥ ३९॥

महाचीनपदस्थाय दातव्यं कवचोत्तमम् ।
गुह्यं गोप्यं महादेवि लक्ष्मीनारायणप्रियम् ।
वज्रपञ्जरकं वर्म गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४०॥

॥ इति श्री रुद्रयामलं तन्त्रे श्री देवी रहस्ये लक्ष्मीनारायण कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री विष्णु पञ्जर स्तोत्रम् ॥

एकादशी तिथि पर भगवान विष्णु का स्मरण मात्र ही इच्छाओं को पूरा करने वाला माना गया है। यह विष्णु पञ्जर स्तोत्र के नाम से भी प्रसिद्ध है। माना जाता है कि, इसके प्रभाव से ही माता रानी ने भी रक्तबीज व महिषासुर जैसे राक्षसों का अंत किया था।

- **हरिरुवाच**

प्रवक्ष्याम्यधुना ह्येतद्वैष्णवं पञ्जरं शुभम्।
नमोनमस्ते गोविन्द चक्रं गृह्य सुदर्शनम्॥ १॥

- प्राच्यां रक्षस्व मां विष्णो ! त्वामहं शरणं गतः।
  गदां कौमोदकीं गृह्ण पद्मनाभ नमोऽस्त ते॥ २॥
- याम्यां रक्षस्व मां विष्णो ! त्वामहं शरणं गतः।
  हलमादाय सौनन्दे नमस्ते पुरुषोत्तम॥ ३॥
- प्रतीच्यां रक्ष मां विष्णो ! त्वामह शरणं गतः।
  मुसलं शातनं गृह्य पुण्डरीकाक्ष रक्ष माम्॥ ४॥
- उत्तरस्यां जगन्नाथ ! भवन्तं शरणं गतः।
  खड्गमादाय चर्माथ अस्त्रशस्त्रादिकं हरे !॥ ५॥
- नमस्ते रक्ष रक्षोघ्न ! ऐशान्यां शरणं गतः।
  पाञ्चजन्यं महाशङ्खमनुघोष्यं च पङ्कजम्॥ ६॥
- प्रगृह्य रक्ष मां विष्णो आग्न्येय्यां रक्ष सूकर।
  चन्द्रसूर्यं समागृह्य खड्गं चान्द्रमसं तथा॥ ७॥
- नैरृत्यां मां च रक्षस्व दिव्यमूर्ते नृकेसरिन्।
  वैजयन्तीं सम्प्रगृह्य श्रीवत्सं कण्ठभूषणम्॥ ८॥
- वायव्यां रक्ष मां देव हयग्रीव नमोऽस्तु ते।
  वैनतेयं समारुह्य त्वन्तरिक्षे जनार्दन !॥ ९॥
- मां रक्षस्वाजित सदा नमस्तेऽस्त्वपराजित।
  विशालाक्षं समारुह्य रक्ष मां त्वं रसातले॥ १०॥
- अकूपार नमस्तुभ्यं महामीन नमोऽस्तु ते।
  करशीर्षाद्यङ्गुलीषु सत्य त्वं बाहुपञ्जरम्॥ ११॥
- कृत्वा रक्षस्व मां विष्णो नमस्ते पुरुषोत्तम।
  एतदुक्तं शङ्कराय वैष्णवं पञ्जरं महत्॥ १२॥
- पुरा रक्षार्थमीशान्याः कात्यायन्या वृषध्वज।
  नाशायामास सा येन चामरान्महिषासुरम्॥ १३॥
- दानवं रक्तबीजं च अन्यांश्च सुरकण्टकान्।
  एतज्जपन्नरो भक्त्या शत्रून्विजयते सदा॥ १४॥

॥ इति श्रीगारुडे पूर्वखण्डे प्रथमांशाख्ये आचारकाण्डे विष्णुपञ्जरस्तोत्रं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥

॥ विष्णु पञ्जर स्तोत्रम् (इंद्र-नारद संवादे) ॥

- **विनियोग** ॐ अस्य श्रीविष्णुपञ्जरस्तोत्रमंत्रस्य नारद ऋषि: । अनुष्टुप् छन्द: । श्रीविष्णु: परमात्मा देवता । अहं बीजम् । सोऽहं शक्ति: । ॐ ह्रीं कीलकम् । मम सर्वदेहरक्षणार्थे जपे विनियोग: ॥

नारद ऋषये नम: शिरसि । श्रीविष्णुपरमात्मदेवतायै नम: हृदये । सोऽहं शक्ति: पादयो: ।
अनुष्टुप् छन्दसे नम: मुखे । अहं बीजं गुह्ये । ॐ ह्रीं कीलकं पादाग्रे ।

- **करन्यास:** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्र: इति मन्त्र: ।
  - ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: ।
  - ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: ।
  - ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ।
  - ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: ।
  - ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ।
  - ॐ ह्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: ।

- **हृदयादिन्यास:** ॐ ह्रां हृदयाय नम: ।
  - ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
  - ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ।
  - ॐ ह्रैं कवचायहुम् ।
  - ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
  - ॐ ह्र: अस्त्राय फट् ।
  - अहंबीजादिमन्त्रत्रयेण प्राणायामं कुर्यात् ।

- **ध्यानम्** परं परस्मात्प्रकृतेरनादिमेकं निविष्टं बहुधा गुहायाम् ।
  - सर्वालयं सर्वचराचरस्थं नमामि विष्णुं जगदेकनाथम् ॥ १ ॥

ॐ विष्णुपंजरकं दिव्यं सर्वदुष्टनिवारणम् ।
उग्रतेजो महावीर्यं सर्वशत्रुनिकृंतनम् ॥ ॥ २॥

त्रिपुरं दहमानस्य हरस्य ब्रह्मणोदितम् ।
तदहं संप्रवक्ष्यामि आत्मरक्षाकरं नृणाम् ॥ ३॥

पादौ रक्षतु गोविंदो जंघे चैव त्रिविक्रम: ।
ऊरू मे केशव: पातु कटिं चैव जनार्दन: ॥ ४॥

नाभिं चैवाच्युत: पातु गुह्यं चैव तु वामन: ।
उदरं पद्मनाभश्च पृष्ठं चैव तु माधव: ॥ ॥ ५॥

वामपार्श्वं तथा विष्णुर्दक्षिणं मधुसूदन: ।
बाहू वै वासुदेवश्च हृदि दामोदरस्तथा ॥ ॥ ६॥

कंठं रक्षतु वाराह: कृष्णश्च मुखमंडलम् ।
माधव: कर्णमूले तु हृषीकेशश्च नासिके ॥ ७॥

नेत्रे नारायणो रक्षेल्ललाटं गरुडध्वज: ।
कपोलौ केशवो रक्षेद्वैकुंठ: सर्वतो दिशम् ॥ ८॥

श्रीवत्सांकश्च सर्वेषामंगानां रक्षको भवेत ।
पूर्वस्यां पुंडरीकाक्ष आग्नेय्यां श्रीधरस्तथा ॥ ९॥

दक्षिणे नारसिंहश्च नैऋत्यां माधवोऽवतु ।
पुरूषोत्तमो मे वारुण्यां वायव्यां च जनार्दन: ॥ १०॥

गदाधरस्तु कौबेर्यामीशान्यां पातु केशव: ।
आकाशे च गदा पातु पाताले च सुदर्शनम् ॥ ११॥

सन्नद्ध: सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपंजर: ।
विष्णुपञ्जरविष्टोऽहं विचरामि महीतले ॥ १२॥

राजद्वारेऽपथे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे ।
नदीषु चरणे चैव चोरव्याघ्रभयेषु च ॥ ॥ १३॥

डाकिनीप्रेतभूतेषु भयं तस्य न जायते ।
रक्ष रक्ष महादेव रक्ष रक्ष जनेश्वर ॥ ॥ १४॥

रक्षंतु देवता: सर्वा ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा: ।
जले रक्षतु वाराह: स्थले रक्षतु वामन: ॥ १५॥

अटव्यां नारसिंहश्च सर्वत: पातु केशव: ।
दिवा रक्षतु मां सूर्यो रात्रौ रक्षतु चन्द्रमा: ॥ १६॥

पंथानं दुर्गमं रक्षेत्सर्वमेव जनार्दन: ।
रोगविघ्नहतश्चैव ब्रह्महा गुरुतल्पग: ॥ ॥ १७॥

स्त्रीहंता बालघाती च सुरापो वृषलीपति: ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो य: पठेन्नात्र संशय: ॥ १८॥

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥१९॥

आपदो हरते नित्यं विष्णुस्तोत्रार्थसंपदा ।
यस्त्विदं पठते स्तोत्रं विष्णुपंजरमुत्तमम् ॥ २०॥

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।
गोसहस्त्रफलं तस्य वाजपेयशतस्य च ॥ ॥ २१॥

अश्वमेधसहस्त्रस्य फलं प्राप्नोति मानव: ।
सर्व कामं लभेदस्य पठनान्नात्र संशय: ॥ ॥ २२॥

जले विष्णु: स्थले विष्णुर्विष्णु : पर्वतमस्तके ।
ज्वालामालाकुले विष्णु: सर्व विष्णु:मयं जगत् ॥ २३ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे इंद्रनारदसंवादे श्रीविष्णुपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

॥ श्री सुदर्शन कवचम् ॥

आपको कोई परेशानी हो रही है तो, इधर ध्यान दे ऊपरी बाधा, अला-बला, भूत, भूतिनी, यक्षिणी, प्रेतिनी किसी भी तरह की ओपरी विपत्ति में सुदर्शन कवच रक्षा करता है। यह अद्वितीय तान्त्रिक शक्ति से युक्त है। अतः सुदर्शनचक्र की भान्ति पाठक की सदैव रक्षा करता है।

- **विनियोग** ॐ अस्य श्री सुदर्शन कवच माला मंत्रस्य श्री लक्ष्मी नृसिंह: परमात्मा देवता क्षां बीजं ह्रीं शक्ति मम कार्य सिध्यर्थे जपे विनयोग:।

- **करण्यास हृदयादि न्यास** ॐ क्षां अंगुष्ठाभ्याम नम: हृदयाय नम:
  - ॐ ह्रीं तर्जनीभ्याम नम: शिरसे स्वाहा
  - ॐ श्रीं मध्यमाभ्याम नम: शिखाए वषट
  - ॐ सहस्रार अनामिकभ्याम नम: कवचाय हुम
  - ॐ हुं फट कनिष्ठिकाभ्याम नम: नेत्रत्रयाय वौषट
  - ॐ स्वाहा करतल-कर प्रिष्ठाभ्याम नम: अस्त्राय फट

- **ध्यानम्** **उपसमाहे नृसिंह आख्यम ब्रह्म वेदांत गोचरम।**
  भूयो-लालित संसाराच्चेद हेतुं जगत गुरुम ॥

- **ॐ सुदर्शने नम:**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों नमो भगवते प्रलय काल महा ज्वाला घोर वीर सुदर्शन नृसिंहआय ॐ महा चक्र राजाय महा बले सहस्रकोटिसूर्यप्रकाशाय सहस्रशीर्षआय सहस्रअक्षाय सहस्रपादाय संकर्षणआत्मने सहस्रदिव्याश्र सहस्र हस्ताय सर्वतोमुख ज्वलन ज्वाला माला वृताया विस्फु लिंग स्फोट परिस्फोटित ब्रह्माण्ड भानडाय महा पराक्रमाय महोग्र विग्रहाय महावीराय महा विष्णु रुपिणे व्यतीत कालान्त काय महाभद्र रोद्रा वताराया मृत्यु स्वरूपाय किरीट-हार-केयूर-ग्रेवेयक-कटक अन्गुलयी-कटिसूत्र मजीरादी कनक मणि खचित दिव्य भूषणआय महा भीषणआय महा भिक्षया व्याहत तेजो रूप निधेय रक्त चंडआंतक मण्डितम दोरु कुंडा दूर निरिक्षणआय प्रत्यक्ष आय ब्रह्म चक्र विष्णु चक्र कल चक्र भूमि चक्र तेजोरूपाय आश्रितरक्षाय।**
- **ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात इति स्वाहा स्वाहा**
- **ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात इति स्वाहा स्वाहा भो भो सुदर्शन नारसिंह माम रक्षय रक्षय।**
- **ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात।**
- **ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात मम शत्रून नाशय नाशय।**

- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंड चंड प्रचंड प्रचंड स्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चट प्रचटं प्रचटं प्रस्फुट दह कहर भग भिन्धि हंधी खट्ट प्रचट फट जहि जहि पय सस प्रलय वा पुरुषाय रं रं नेत्राग्नी रूपाय ।
- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात भो भो सुदर्शन नारसिंह माम रक्षय रक्षय ।
- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात एही एही आगच्छ आगच्छ भूतग्रह- प्रेतग्रह- पिशाचग्रह-दानावग्रह-कृत्रिम्ग्रह- प्रयोगग्रह-आवेशग्रह-आगतग्रह-अनागतग्रह- ब्रह्म्ग्रह-रुद्रग्रह-पतालग्रह-निराकारग्रह -आचार-अनाचार ग्रह- नन्जाती ग्रह- भूचर ग्रह- खेचर ग्रह- वृक्ष ग्रह- पिक्षी चर ग्रह- गिरी चर ग्रह- श्मशान चर ग्रह -जलचर ग्रह -कूप चर ग्रह- देगारचल ग्रह- शुन्यगार चर ग्रह- स्वप्न ग्रह- दिवामनो ग्रह- बालग्रह -मूकग्रह- मुख ग्रह - बधिर ग्रह- स्त्री ग्रह- पुरुष ग्रह- यक्ष ग्रह- राक्षस ग्रह- प्रेत ग्रह किन्नर ग्रह- साध्य चर ग्रह - सिद्ध चर ग्रह -कामिनी ग्रह- मोहनी ग्रह-पद्मिनी ग्रह- यक्षिणी ग्रह- पकषिणी ग्रह संध्या ग्रह- उच्चाटय उच्चाटय भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ क्षरां क्षरीं क्षरूं क्षरें क्षरों क्षर : भरां भरीं भरूं भरें भरों भर: ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रों ह्र: घरां घरीं घरूं घरें घरों घर: श्रां श्रीं श्रुं श्रें श्रों श्र: ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्न: चक्र: प्रचोदयात एही एही सालवं संहारय शरभं क्रन्दया विद्रावय विद्रावय भैरव भीषय भीषय प्रत्यांगिरी मर्दय मर्दय चिदंबरम बंधय बंधय विदम्बरम ग्रासय ग्रासय शांम्भ्वी निबंतय कालीं दह दह महिषासुरी छेदय छेदय दुष्ट शक्ति निर्मूलय निर्मूलय रूं रूं हूँ हूँ मुरु मुरु परमन्त्र - परयन्त्र - परतंत्र कटुपरं वादपर जपपर होमपर सहस्र दीप कोटि पुजां भेदय भेदय मारय मारय खंडय खंडय परकृतकं विषं निर्विष कुरु कुरु अग्नि मुख प्रकांड नानाविध कृतं मुख वनमुखं ग्राहान चुर्णय चुर्णय मारी विदारय कुष्मांड वैनायक मारीचगणान भेदय भेदय मन्त्रं परअस्माकं विमोचय विमोचय अक्षिशूल कुक्षीशूल गुल्मशूल पार्श्वशूल सर्वाबाधा निवारय निवारय पांडूरोगं संहारय संहारय विषम ज्वर त्रासय त्रासय एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्टज्वर सप्तमज्वर अष्टमज्वर नवमज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर दानवज्वर महाकालज्वरं दुर्गाज्वरं ब्रह्माविष्णुज्वरं माहेश्वरज्वरं चतु:षष्टि योगिनीज्वरं गन्धर्वज्वरं बेतालज्वरं एतान ज्वरान्न नाशय नाशय दोषं मंथय मंथय दुरित हर हर

अन्नत वासुकी तक्षक कालौय पद्म कुलिक कर्कोटक शंख पलाद्य अष्ट नाग कुलानां विषं हन हन खं खं घं घं पाशुपतं नाशय नाशय शिखंडी खंडय खंडय प्रमुख दुष्ट तंत्र स्फोटय स्फोटय भ्रामय भ्रामय महानारायणअस्त्राय पंचाशधरणरूपाय लल लल शरणागत रक्षणाय हूँ हूँ गं वं गं वं शं शं अमृतमूर्तये तुभ्यं नमः ।

- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्नः चक्रः प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्नः चक्रः प्रचोदयात भो भो सुदर्शन नारसिंह माम रक्षय रक्षय ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्नः चक्रः प्रचोदयात ।
- ॐ सुदर्शन विद्महे महा ज्वालाय धीमहि तन्नः चक्रः प्रचोदयात मम सर्वारिष्ट शान्तिं कुरु कुरु सर्वतो रक्ष रक्ष
- ॐ ह्रीं हूँ फट स्वाहा ।
- ॐ क्षोम ह्रीं श्रीं सहस्रार हूँ फट स्वाहा ।

॥ श्री विष्णु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

1. ॐ विष्णवे नमः।
2. ॐ लक्ष्मीपतये नमः।
3. ॐ कृष्णाय नमः।
4. ॐ वैकुण्ठाय नमः।
5. ॐ गरुडध्वजाय नमः।
6. ॐ परब्रह्मणे नमः।
7. ॐ जगन्नाथाय नमः।
8. ॐ वासुदेवाय नमः।
9. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
10. ॐ दैत्यान्तकाय नमः।
11. ॐ मधुरिपवे नमः।
12. ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः।
13. ॐ सनातनाय नमः।
14. ॐ नारायणाय नमः।
15. ॐ पद्मनाभाय नमः।
16. ॐ हृषीकेशाय नमः।
17. ॐ सुधाप्रदाय नमः।
18. ॐ माधवाय नमः।
19. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
20. ॐ स्थितिकर्त्रे नमः।
21. ॐ परात्पराय नमः।
22. ॐ वनमालिने नमः।
23. ॐ यज्ञरूपाय नमः।
24. ॐ चक्रपाणये नमः।
25. ॐ गदाधराय नमः।
26. ॐ उपेन्द्राय नमः।
27. ॐ केशवाय नमः।
28. ॐ हंसाय नमः।
29. ॐ समुद्रमथनाय नमः।
30. ॐ हरये नमः।
31. ॐ गोविन्दाय नमः।
32. ॐ ब्रह्मजनकाय नमः।
33. ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः।
34. ॐ श्रीधराय नमः।
35. ॐ कामजनकाय नमः।
36. ॐ शेषशायिने नमः।
37. ॐ चतुर्भुजाय नमः।
38. ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः।
39. ॐ श्रीमते नमः।
40. ॐ शार्ङ्गपाणये नमः।
41. ॐ जनार्दनाय नमः।
42. ॐ पीताम्बरधराय नमः।
43. ॐ देवाय नमः।
44. ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः।
45. ॐ मत्स्यरूपाय नमः।
46. ॐ कूर्मतनवे नमः।
47. ॐ क्रोडरूपाय नमः।
48. ॐ नृकेसरिणे नमः।
49. ॐ वामनाय नमः।
50. ॐ भार्गवाय नमः।
51. ॐ रामाय नमः।
52. ॐ बलिने नमः।
53. ॐ कल्किने नमः।
54. ॐ हयाननाय नमः।
55. ॐ विश्वम्भराय नमः।
56. ॐ शिशुमाराय नमः।
57. ॐ श्रीकराय नमः।
58. ॐ कपिलाय नमः।
59. ॐ ध्रुवाय नमः।
60. ॐ दत्तत्रेयाय नमः।
61. ॐ अच्युताय नमः।
62. ॐ अनन्ताय नमः।
63. ॐ मुकुन्दाय नमः।
64. ॐ दधिवामनाय नमः।
65. ॐ धन्वन्तरये नमः।
66. ॐ श्रीनिवासाय नमः।
67. ॐ प्रद्युम्नाय नमः।
68. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
69. ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः।
70. ॐ मुरारातये नमः।
71. ॐ अधोक्षजाय नमः।
72. ॐ ऋषभाय नमः।
73. ॐ मोहिनीरूपधारिणे नमः।
74. ॐ सङ्कर्षणाय नमः।
75. ॐ पृथवे नमः।
76. ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः।
77. ॐ भूतात्मने नमः।
78. ॐ अनिरुद्धाय नमः।
79. ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
80. ॐ नराय नमः।
81. ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः।
82. ॐ त्रिधाम्ने नमः।
83. ॐ भूतभावनाय नमः।
84. ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः।
85. ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः।
86. ॐ भगवते नमः।
87. ॐ शङ्करप्रियाय नमः।
88. ॐ नीलकान्ताय नमः।
89. ॐ धराकान्ताय नमः।
90. ॐ वेदात्मने नमः।
91. ॐ बादरायणाय नमः।
92. ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः।
93. ॐ सतां प्रभवे नमः।
94. ॐ स्वभुवे नमः।
95. ॐ विभवे नमः।
96. ॐ घनश्यामाय नमः।
97. ॐ जगत्कारणाय नमः।
98. ॐ अव्ययाय नमः।
99. ॐ बुद्धावताराय नमः।
100. ॐ शान्तात्मने नमः।
101. ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः।
102. ॐ दामोदराय नमः।
103. ॐ विराड्रूपाय नमः।
104. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः।
105. ॐ आदिदेवाय नमः।
106. ॐ देवदेवाय नमः।
107. ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः।
108. ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः।

॥ इति श्री विष्णु अष्टोत्तरशत नामावली सम्पूर्णम ॥

॥ श्री नारसिंह अष्टोत्तरशत नामावली ॥

1. ॐ नारसिंहाय नमः।
2. ॐ महासिंहाय नमः।
3. ॐ दिव्यसिंहाय नमः।
4. ॐ महाबलाय नमः।
5. ॐ उग्रसिंहाय नमः।
6. ॐ महादेवाय नमः।
7. ॐ स्तम्भजाय नमः।
8. ॐ उग्रलोचनाय नमः।
9. ॐ रौद्राय नमः।
10. ॐ सर्वाद्भुताय नमः।
11. ॐ श्रीमते नमः।
12. ॐ योगानन्दाय नमः।
13. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
14. ॐ हरये नमः।
15. ॐ कोलाहलाय नमः।
16. ॐ चक्रिणे नमः।
17. ॐ विजयाय नमः।
18. ॐ जयवर्धनाय नमः।
19. ॐ पञ्चाननाय नमः।
20. ॐ परब्रह्मणे नमः।
21. ॐ अघोराय नमः।
22. ॐ घोरविक्रमाय नमः।
23. ॐ ज्वलन्मुखाय नमः।
24. ॐ ज्वालमालिने नमः।
25. ॐ महाज्वालाय नमः।
26. ॐ महाप्रभवे नमः।
27. ॐ निटिलाक्षाय नमः।
28. ॐ सहस्राक्षाय नमः।
29. ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः।
30. ॐ प्रतापनाय नमः।
31. ॐ महादंष्ट्रायुधाय नमः।
32. ॐ प्राज्ञाय नमः।
33. ॐ चण्डकोपिने नमः।
34. ॐ सदाशिवाय नमः।
35. ॐ हिरण्यकशिपुध्वंसिने नमः।
36. ॐ दैत्यदानवभञ्जनाय नमः।
37. ॐ गुणभद्राय नमः।
38. ॐ महाभद्राय नमः।
39. ॐ बलभद्राय नमः।
40. ॐ सुभद्रकाय नमः।
41. ॐ कराला नमः।
42. ॐ विकरालाय नमः।
43. ॐ विकर्त्रे नमः।
44. ॐ सर्वकर्तृकाय नमः।
45. ॐ शिंशुमाराय नमः।
46. ॐ त्रिलोकात्मने नमः।
47. ॐ ईशाय नमः।
48. ॐ सर्वेश्वराय नमः।
49. ॐ विभवे नमः।
50. ॐ भैरवाडम्बराय नमः।
51. ॐ दिव्याय नमः।
52. ॐ अच्युताय नमः।
53. ॐ कविमाधवाय नमः।
54. ॐ अधोक्षजाय नमः।
55. ॐ अक्षराय नमः।
56. ॐ शर्वाय नमः।
57. ॐ वनमालिने नमः।
58. ॐ वरप्रदाय नमः।
59. ॐ विश्वम्भराय नमः।
60. ॐ अद्भुताय नमः।
61. ॐ भव्याय नमः।
62. ॐ श्रीविष्णवे नमः।
63. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
64. ॐ अनघास्त्राय नमः।
65. ॐ नखास्त्राय नमः।
66. ॐ सूर्यज्योतिषे नमः।
67. ॐ सुरेश्वराय नमः।
68. ॐ सहस्रबाहवे नमः।
69. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
70. ॐ सर्वसिद्धिप्रदायकाय नमः।
71. ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः।
72. ॐ वज्रनखाय नमः।
73. ॐ महानन्दाय नमः।
74. ॐ परन्तपाय नमः।
75. ॐ सर्वयन्त्रैकरूपाय नमः।
76. ॐ सर्वयन्त्रविदारणाय नमः।
77. ॐ सर्वतन्त्रात्मकाय नमः।
78. ॐ अव्यक्ताय नमः।
79. ॐ सुव्यक्ताय नमः।
80. ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
81. ॐ वैशाखशुक्लभूतोत्थाय नमः।
82. ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
83. ॐ उदारकीर्तये नमः।
84. ॐ पुण्यात्मने नमः।
85. ॐ महात्मने नमः।
86. ॐ चण्डविक्रमाय नमः।
87. ॐ वेदत्रयप्रपूज्याय नमः।
88. ॐ भगवते नमः।
89. ॐ परमेश्वराय नमः।
90. ॐ श्रीवत्साङ्काय नमः।
91. ॐ श्रीनिवासाय नमः।
92. ॐ जगद्व्यापिने नमः।
93. ॐ जगन्मयाय नमः।
94. ॐ जगत्पालाय नमः।
95. ॐ जगन्नाथाय नमः।
96. ॐ महाकायाय नमः।
97. ॐ द्विरूपभृते नमः।
98. ॐ परमात्मने नमः।
99. ॐ परंज्योतिषे नमः।
100. ॐ निर्गुणाय नमः।
101. ॐ नृकेसरिणे नमः।
102. ॐ परतत्त्वाय नमः।
103. ॐ परंधाम्ने नमः।
104. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः।
105. ॐ लक्ष्मीनृसिंहाय नमः।
106. ॐ सर्वात्मने नमः।
107. ॐ धीराय नमः।
108. ॐ प्रह्लादपालकाय नमः।

॥ इति श्री नारसिंह अष्टोत्तरशत नामावली सम्पूर्णम ॥

॥ विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

श्रीहरि भगवान विष्णु के 1000 नामों की महिमा अवर्णनीय है। इन नामों का संस्कृत रूप विष्णुसहस्रनाम के प्रतिरूप में विद्यमान है। विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होता है तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

- **विनियोग** — अस्य श्री विष्णोर्दिव्य सहस्त्र नामस्तोत्र मन्त्रस्य, भगवान वेद व्यास ऋषि: श्रीमहा विष्णु परमात्मा देवता, अनुष्टुप् छन्द: अमृतांशूद्भवो भानुरीति बीजम् देवकीनंदन: स्त्रष्टेति शक्ति:, त्रिसामासामग: सामेति हृदयम्, शंखभृन्नंदकी चकीति कीलकम्, शाङर्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्, रथांगपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्, उदभव: क्षोभणो देव इति परमो मंत्र:, धर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थत् सिद्धि द्वारा श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ।

- **ध्यानम्** — **ॐ शांता कारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।**
  विश्वधारं गगन सदृशम् मेघवर्णं शुभांगम ॥
  लक्ष्मी कान्तं कमल नयनम योगिभिर्ध्यान गम्यं ।
  वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व्वलोकैक नाथम ॥

- **स्तोत्रम्** — **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नम:**
  - **ॐ विश्वं विष्णु: वषट्कारो भूत-भव्य-भवत-प्रभु: ।**
    भूत-कृत भूत-भृत भावो भूतात्मा भूतभावन: ॥ ॥ १॥
  - **पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमं गति:।**
    अव्यय: पुरुष साक्षी क्षेत्रज्ञो अक्षर एव च ॥ ॥ २॥
  - **योगो योग-विदां नेता प्रधान-पुरुषेश्वर: ।**
    नारसिंह-वपु: श्रीमान केशव: पुरुषोत्तम: ॥ ॥ ३॥
  - **सर्व: शर्व: शिव: स्थाणु: भूतादि: निधि: अव्यय: ।**
    संभवो भावनो भर्ता प्रभव: प्रभु: ईश्वर: ॥ ॥ ४॥
  - **स्वयंभू: शम्भु: आदित्य: पुष्कराक्षो महास्वन: ।**
    अनादि-निधनो धाता विधाता धातुरुत्तम: ॥ ॥ ५॥
  - **अप्रमेयो हृषीकेश: पद्मनाभो-अमरप्रभु: ।**
    विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठ: स्थविरो ध्रुव: ॥ ॥ ६॥
  - **अग्राह्य: शाश्वत: कृष्णो लोहिताक्ष: प्रतर्दन: ।**
    प्रभूत: त्रिककुब-धाम पवित्रं मंगलं परं ॥ ॥ ७॥

- ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
  हिरण्य-गर्भो भू-गर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ॥ ८॥
- ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
  अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिः आत्मवान ॥ ॥ ९॥
- सुरेशः शरणं शर्म विश्व-रेताः प्रजा-भवः ।
  अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ ॥१०॥
- अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिः अच्युतः ।
  वृषाकपिः अमेयात्मा सर्व-योग-विनिःसृतः ॥ ॥११॥
- वसुःवसुमनाः सत्यः समात्मा संमितः समः ।
  अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ ॥१२॥
- रुद्रो बहु-शिरा बभ्रुः विश्वयोनिः शुचि-श्रवाः ।
  अमृतः शाश्वतः स्थाणुः वरारोहो महातपाः ॥ ॥१३॥
- सर्वगः सर्वविद्-भानुःविष्वक-सेनो जनार्दनः ।
  वेदो वेदविद-अव्यंगो वेदांगो वेदवित् कविः ॥ ॥१४॥
- लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृता-कृतः ।
  चतुरात्मा चतुर्व्यूहः-चतुर्दंष्ट्रः-चतुर्भुजः ॥ ॥१५॥
- भ्राजिष्णु भोजनं भोक्ता सहिष्णुः जगदादिजः ।
  अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ ॥१६॥
- उपेंद्रो वामनः प्रांशुः अमोघः शुचिः ऊर्जितः ।
  अतींद्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ ॥ १७॥
- वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
  अति-इंद्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ ॥ १८॥
- महाबुद्धिः महा-वीर्यो महा-शक्तिः महा-द्युतिः।
  अनिर्देश्य-वपुः श्रीमान अमेयात्मा महाद्रि-धृक ॥ ॥ १९॥
- महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
  अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदां-पतिः ॥ ॥२०॥
- मरीचिःदमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
  हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ ॥२१॥
- अमृत्युः सर्व-दृक् सिंहः सन-धाता संधिमान स्थिरः ।
  अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ ॥२२॥

- गुरु:गुरुतमो धाम: सत्य: सत्य-पराक्रम: ।
  निमिषो-अ-निमिष: स्रग्वी वाचस्पति: उदार-धी: ॥ ॥२३॥
- अग्रणी: ग्रामणी: श्रीमान न्यायो नेता समीरण: ।
  सहस्र-मूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्ष: सहस्रपात ॥ ॥२४॥
- आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृत: सं-प्रमर्दन: ।
  अह: संवर्तको वह्नि: अनिलो धरणीधर: ॥ ॥२५॥
- सुप्रसाद: प्रसन्नात्मा विश्वधृक्-विश्वभुक्-विभु: ।
  सत्कर्ता सकृत: साधु: जह्नु:-नारायणो नर: ॥ ॥२६॥
- असंख्येयो-अप्रमेयात्मा विशिष्ट: शिष्ट-कृत्-शुचि: ।
  सिद्धार्थ: सिद्धसंकल्प: सिद्धिद: सिद्धिसाधन: ॥ ॥२७॥
- वृषाही वृषभो विष्णु: वृषपर्वा वृषोदर: ।
  वर्धनो वर्धमानश्च विविक्त: श्रुति-सागर: ॥ ॥२८॥
- सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेंद्रो वसुदो वसु: ।
  नैक-रूपो बृहद-रूप: शिपिविष्ट: प्रकाशन: ॥ ॥२९॥
- ओज: तेजो-द्युतिधर: प्रकाश-आत्मा प्रतापन: ।
  ऋद्ध: स्पष्टाक्षरो मंत्र:चंद्रांशु: भास्कर-द्युति: ॥ ॥३०॥
- अमृतांशूद्भवो भानु: शशबिंदु: सुरेश्वर: ।
  औषधं जगत: सेतु: सत्य-धर्म-पराक्रम: ॥ ॥३१॥
- भूत-भव्य-भवत्-नाथ: पवन: पावनो-अनल: ।
  कामहा कामकृत-कांत: काम: कामप्रद: प्रभु: ॥ ॥३२॥
- युगादि-कृत युगावर्तो नैकमायो महाशन: ।
  अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजित्-अनंतजित ॥ ॥३३॥
- इष्टो विशिष्ट: शिष्टेष्ट: शिखंडी नहुषो वृष: ।
  क्रोधहा क्रोधकृत कर्ता विश्वबाहु: महीधर: ॥ ॥३४॥
- अच्युत: प्रथित: प्राण: प्राणदो वासवानुज: ।
  अपाम निधिरधिष्टानम् अप्रमत्त: प्रतिष्ठित: ॥ ॥३५॥
- स्कन्द: स्कन्द-धरो धुर्यो वरदो वायुवाहन: ।
  वासुदेवो बृहद भानु: आदिदेव: पुरंदर: ॥ ॥३६॥
- अशोक: तारण: तार: शूर: शौरि: जनेश्वर: ।
  अनुकूल: शतावर्त: पद्मी पद्मनिभेक्षण: ॥ ॥३७॥

- पद्मनाभो-अरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत ।
  महर्धि-ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुड़ध्वजः ॥ ॥३८॥
- अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
  सर्वलक्षण लक्षण्यो लक्ष्मीवान समितिंजयः ॥ ॥३९॥
- विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुः दामोदरः सहः ।
  महीधरो महाभागो वेगवान-अमिताशनः ॥ ॥४०॥
- उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
  करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ॥४१॥
- व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो-ध्रुवः ।
  परर्रद्धि परमस्पष्टः तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ॥४२॥
- रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयो-अनयः ।
  वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठः धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ॥४३॥
- वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
  हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ॥४४॥
- ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
  उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्व-दक्षिणः ॥ ॥४५॥
- विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम ।
  अर्थो अनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ॥४६॥
- अनिर्विण्णः स्थविष्ठो-अभूर्धर्म-यूपो महा-मखः ।
  नक्षत्रनेमिः नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ॥४७॥
- यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
  सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमं ॥ ॥४८॥
- सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत ।
  मनोहरो जित-क्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ॥४९॥
- स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत ।
  वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ॥५०॥
- धर्मगुब धर्मकृद धर्मी सदसत्क्षरं-अक्षरं ।
  अविज्ञाता सहस्त्रांशुः विधाता कृतलक्षणः ॥ ॥५१॥
- गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
  आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद गुरुः ॥ ॥५२॥

- उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
  शरीर भूतभृद्भोक्ता कपींद्रो भूरिदक्षिणः ॥ ॥५३॥
- सोमपो-अमृतपः सोमः पुरुजित पुरुसत्तमः ।
  विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ ॥५४॥
- जीवो विनयिता-साक्षी मुकुंदो-अमितविक्रमः ।
  अम्भोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयो-अंतकः ॥ ॥५५॥
- अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
  आनंदो नंदनो नंदः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ ॥५६॥
- महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
  त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृंगः कृतांतकृत ॥ ॥५७॥
- महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांगदी ।
  गुह्यो गंभीरो गहनो गुप्तश्चक्र-गदाधरः ॥ ॥५८॥
- वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणो-अच्युतः ।
  वरूणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ॥५९॥
- भगवान भगहानंदी वनमाली हलायुधः ।
  आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुः-गतिसत्तमः ॥ ॥६०॥
- सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
  दिविःस्पृक् सर्वदृक व्यासो वाचस्पतिःअयोनिजः ॥ ॥६१॥
- त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक ।
  संन्यासकृत्-छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणम ॥ ॥६२॥
- शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
  गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ॥६३॥
- अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृत्-शिवः ।
  श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ ॥६४॥
- श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
  श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमान्-लोकत्रयाश्रयः ॥ ॥६५॥
- स्वक्षः स्वंगः शतानंदो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
  विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ॥६६॥
- उदीर्णः सर्वतःचक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
  भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ॥६७॥

- अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
  अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ॥६८॥
- कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
  त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ॥६९॥
- कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ।
  अनिर्देश्यवपुर्विष्णुः वीरोअनंतो धनंजयः ॥ ॥७०॥
- ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृत् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
  ब्रह्मविद ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ॥७१॥
- महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
  महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ॥७२॥
- स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
  पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ॥७३॥
- मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
  वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ॥७४॥
- सद्गतिः सकृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
  शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ॥७५॥
- भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयो-अनलः ।
  दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरो-अथापराजितः ॥ ॥७६॥
- विश्वमूर्तिमहार्मूर्ति:दीप्तमूर्तिः अमूर्तिमान ।
  अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ॥७७॥
- एको नैकः सवः कः किं यत-तत-पद्मनुत्तमम ।
  लोकबंधुः लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ॥७८॥
- सुवर्णोवर्णो हेमांगो वरांगः चंदनांगदी ।
  वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरऽचलश्चलः ॥ ॥७९॥
- अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक ।
  सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ॥८०॥
- तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
  प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृंगो गदाग्रजः ॥ ॥८१॥
- चतुर्मूर्तिः चतुर्बाहुःश्चतुर्व्यूहःचतुर्गतिः ।
  चतुरात्मा चतुर्भाव:चतुर्वेदविदेकपात ॥ ॥८२॥

- समावर्तो-अनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
  दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ॥८३॥
- शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।
  इंद्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ॥८४॥
- उद्भवः सुंदरः सुंदो रत्ननाभः सुलोचनः ।
  अर्को वाजसनः श्रृंगी जयंतः सर्वविज-जयी ॥ ॥८५॥
- सुवर्णबिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
  महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधः ॥ ॥८६॥
- कुमुदः कुंदरः कुंदः पर्जन्यः पावनो-अनिलः ।
  अमृतांशो-अमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ॥८७॥
- सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
  न्यग्रोधो औदुंबरो-अश्वत्थःचाणूरांध्रनिषूदनः॥ ॥८८॥
- सहस्रार्चिः सप्तजिव्हः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
  अमूर्तिरनघो-अचिंत्यो भयकृत्-भयनाशनः ॥ ॥८९॥
- अणुःबृहत कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
  अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ ॥९०॥
- भारभृत्-कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
  आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ ॥९१॥
- धनुर्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
  अपराजितः सर्वसहो नियंता नियमो यमः ॥ ॥९२॥
- सत्त्ववान सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
  अभिप्रायः प्रियार्हो-अर्हः प्रियकृत-प्रीतिवर्धनः ॥ ॥९३॥
- विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग विभुः ।
  रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ ॥९४॥
- अनंतो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
  अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकधिष्ठानमद्भुतः ॥ ॥९५॥
- सनात्-सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
  स्वस्तिदः स्वस्तिकृत स्वस्ति स्वस्तिभुक स्वस्तिदक्षिणः ॥ ॥९६॥
- अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
  शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ॥९७॥

- अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
  विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ॥९८॥
- उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
  वीरहा रक्षणः संतो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ॥९९॥
- अनंतरूपो-अनंतश्रीः जितमन्युः भयापहः ।
  चतुरश्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ ॥१००॥
- अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः ।
  जननो जनजन्मादिः भीमो भीमपराक्रमः ॥ ॥१०१॥
- आधारनिलयो-धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
  ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ ॥१०२॥
- प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत प्राणजीवनः ।
  तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्यु जरातिगः ॥ ॥१०३॥
- भूर्भवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
  यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ॥ ॥१०४॥
- यज्ञभृत्-यज्ञकृत्-यज्ञी यज्ञभुक्-यज्ञसाधनः ।
  यज्ञान्तकृत-यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ ॥१०५॥
- आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
  देवकीनंदनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ ॥१०६॥
- शंखभृन्नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
  रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ ॥१०७॥
- सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः इति ।
- वनमालि गदी शार्ङ्गी शंखी चक्री च नंदकी ।
  श्रीमान् नारायणो विष्णुः वासुदेवोअभिरक्षतु ।

॥ श्री विष्णु सहस्त्र नामावलिः ॥

1. ॐ विश्वस्मै नमः ।
2. ॐ विष्णवे नमः ।
3. ॐ वषट्काराय नमः ।
4. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः ।
5. ॐ भूतकृते नमः ।
6. ॐ भूतभृते नमः ।
7. ॐ भावाय नमः ।
8. ॐ भूतात्मने नमः ।
9. ॐ भूतभावनाय नमः ।
10. ॐ पूतात्मने नमः ।
11. ॐ परमात्मने नमः ।
12. ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः
13. ॐ अव्ययाय नमः ।
14. ॐ पुरुषाय नमः ।
15. ॐ साक्षिणे नमः ।
16. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः ।
17. ॐ अक्षराय नमः ।
18. ॐ योगाय नमः ।
19. ॐ योगिविदां नेत्रे नमः ।
20. ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः ।
21. ॐ नारसिंहवपुषे नमः ।
22. ॐ श्रीमते नमः ।
23. ॐ केशवाय नमः ।
24. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः ।
25. ॐ सर्वस्मै नमः ।
26. ॐ शर्वाय नमः ।
27. ॐ शिवाय नमः ।
28. ॐ स्थाणवे नमः ।
29. ॐ भूतादये नमः ।
30. ॐ निधयेऽव्ययाय नमः ।
31. ॐ समभवाय नमः ।
32. ॐ भावनाय नमः ।
33. ॐ भर्त्रे नमः ।
34. ॐ प्रभवाय नमः ।
35. ॐ प्रभवे नमः ।
36. ॐ ईश्वराय नमः ।
37. ॐ स्वयम्भुवे नमः ।
38. ॐ शम्भवे नमः ।
39. ॐ आदित्याय नमः ।
40. ॐ पुष्कराक्षाय नमः ।
41. ॐ महास्वनाय नमः ।
42. ॐ अनादिनिधनाय नमः ।
43. ॐ धात्रे नमः ।
44. ॐ विधात्रे नमः ।
45. ॐ धातवे उत्तमाय नमः ।
46. ॐ अप्रमेयाय नमः ।
47. ॐ हृषीकेशाय नमः ।
48. ॐ पद्मनाभाय नमः ।
49. ॐ अमरप्रभवे नमः ।
50. ॐ विश्वकर्मणे नमः ।
51. ॐ मनवे नमः ।
52. ॐ त्वष्टे नमः ।
53. ॐ स्थविष्ठाय नमः ।
54. ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः ।
55. ॐ अग्राह्याय नमः ।
56. ॐ शाश्वताय नमः ।
57. ॐ कृष्णाय नमः ।
58. ॐ लोहिताक्षयाय नमः ।
59. ॐ प्रतर्दनाय नमः ।
60. ॐ प्रभूताय नमः ।
61. ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः ।
62. ॐ पवित्राय नमः ।
63. ॐ मङ्गलपराय नमः ।
64. ॐ ईशानाय नमः ।
65. ॐ प्राणदाय नमः ।
66. ॐ प्राणाय नमः ।
67. ॐ ज्येष्ठाय नमः ।
68. ॐ श्रेष्ठाय नमः ।
69. ॐ प्रजापतये नमः ।
70. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ।
71. ॐ भूगर्भाय नमः ।
72. ॐ माधवाय नमः ।
73. ॐ मधुसूदनाय नमः ।
74. ॐ ईश्वराय नमः ।
75. ॐ विक्रमिणे नमः ।
76. ॐ धन्विने नमः ।
77. ॐ मेधाविने नमः ।
78. ॐ विक्रमाय नमः ।
79. ॐ क्रमाय नमः ।
80. ॐ अनुत्तमाय नमः ।
81. ॐ दुराधर्षाय नमः ।
82. ॐ कृतज्ञाय नमः ।
83. ॐ कृतये नमः ।
84. ॐ आत्मवते नमः ।
85. ॐ सुरेशाय नमः ।
86. ॐ शरणाय नमः ।
87. ॐ शर्मणे नमः ।
88. ॐ विश्वरेतसे नमः ।
89. ॐ प्रजाभवाय नमः ।
90. ॐ अह्ने नमः ।
91. ॐ संवत्सराय नमः ।
92. ॐ व्यालाय नमः ।
93. ॐ प्रत्ययाय नमः ।
94. ॐ सर्वदर्शनाय नमः ।
95. ॐ अजाय नमः ।
96. ॐ सर्वेश्वराय नमः ।
97. ॐ सिद्धाय नमः ।
98. ॐ सिद्धये नमः ।
99. ॐ सर्वादये नमः ।

100. ॐ अच्युताय नमः ।
101. ॐ वृषाकपये नमः ।
102. ॐ अमेयात्मने नमः ।
103. ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः ।
104. ॐ वसवे नमः ।
105. ॐ वसुमनसे नमः ।
106. ॐ सत्याय नमः ।
107. ॐ समात्मने नमः ।
108. ॐ असम्मिताय नमः ।
109. ॐ समाय नमः ।
110. ॐ अमोघाय नमः ।
111. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।
112. ॐ वृषकर्मणे नमः ।
113. ॐ वृषाकतये नमः ।
114. ॐ रुद्राय नमः ।
115. ॐ बहुशिरसे नमः ।
116. ॐ बभ्रवे नमः ।
117. ॐ विश्वयोनये नमः ।
118. ॐ शुचिश्रवसे नमः ।
119. ॐ अमृताय नमः ।
120. ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः ।
121. ॐ वरारोहाय नमः ।
122. ॐ महातपसे नमः ।
123. ॐ सर्वगाय नमः ।
124. ॐ सर्वविद्भानवे नमः ।
125. ॐ विष्वक्सेनाय नमः ।
126. ॐ जनार्दनाय नमः ।
127. ॐ वेदाय नमः ।
128. ॐ वेदविदे नमः ।
129. ॐ अव्यङ्गाय नमः ।
130. ॐ वेदाङ्गाय नमः ।
131. ॐ वेदविदे नमः ।
132. ॐ कवये नमः ।
133. ॐ लोकाध्यक्षाय नमः ।
134. ॐ सुराध्यक्षाय नमः ।
135. ॐ धर्माध्यक्षाय नमः ।
136. ॐ कृताकृताय नमः ।
137. ॐ चतुरात्मने नमः ।
138. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः ।
139. ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः ।
140. ॐ चतुर्भुजाय नमः ।
141. ॐ भ्राजिष्णवे नमः ।
142. ॐ भोजनाय नमः ।
143. ॐ भोक्त्रे नमः ।
144. ॐ सहिष्णवे नमः ।
145. ॐ जगदादिजाय नमः ।
146. ॐ अनघाय नमः ।
147. ॐ विजयाय नमः ।
148. ॐ जेत्रे नमः ।
149. ॐ विश्वयोनये नमः ।
150. ॐ पुनर्वसवे नमः ।
151. ॐ उपेन्द्राय नमः ।
152. ॐ वामनाय नमः ।
153. ॐ प्रांशवे नमः ।
154. ॐ अमोघाय नमः ।
155. ॐ शुचये नमः ।
156. ॐ ऊर्जिताय नमः ।
157. ॐ अतीन्द्राय नमः ।
158. ॐ संग्रहाय नमः ।
159. ॐ सर्गाय नमः ।
160. ॐ धृतात्मने नमः ।
161. ॐ नियमाय नमः ।
162. ॐ यमाय नमः ।
163. ॐ वेद्याय नमः ।
164. ॐ वैद्याय नमः ।
165. ॐ सदायोगिने नमः ।
166. ॐ वीरघ्ने नमः ।
167. ॐ माधवाय नमः ।
168. ॐ मधवे नमः ।
169. ॐ अतीन्द्रियाय नमः ।
170. ॐ महामायाय नमः ।
171. ॐ महोत्साहाय नमः ।
172. ॐ महाबलाय नमः ।
173. ॐ महाबुद्धये नमः ।
174. ॐ महावीर्याय नमः ।
175. ॐ महाशक्तये नमः ।
176. ॐ महाद्युतये नमः ।
177. ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः ।
178. ॐ श्रीमते नमः ।
179. ॐ अमेयात्मने नमः ।
180. ॐ महाद्रिधृषे नमः ।
181. ॐ महेष्वासाय नमः ।
182. ॐ महीभर्त्रे नमः ।
183. ॐ श्रीनिवासाय नमः ।
184. ॐ सतां गतये नमः ।
185. ॐ अनिरुद्धाय नमः ।
186. ॐ सुरानन्दाय नमः ।
187. ॐ गोविन्दाय नमः ।
188. ॐ गोविदां पतये नमः ।
189. ॐ मरीचये नमः ।
190. ॐ दमनाय नमः ।
191. ॐ हंसाय नमः ।
192. ॐ सुपर्णाय नमः ।
193. ॐ भुजगोत्तमाय नमः ।
194. ॐ हिरण्यनाभाय नमः ।
195. ॐ सुतपसे नमः ।
196. ॐ पद्मनाभाय नमः ।
197. ॐ प्रजापतये नमः ।
198. ॐ अमृत्यवे नमः ।
199. ॐ सर्वदृशे नमः ।
200. ॐ सिंहाय नमः ।
201. ॐ संधात्रे नमः ।
202. ॐ संधिमते नमः ।
203. ॐ स्थिराय नमः ।
204. ॐ अजाय नमः ।

205. ॐ दुर्मर्षणाय नमः ।
206. ॐ शास्त्रे नमः ।
207. ॐ विश्रुतात्मने नमः ।
208. ॐ सुरारिघ्ने नमः ।
209. ॐ गुरवे नमः ।
210. ॐ गुरुतमाय नमः ।
211. ॐ धाम्ने नमः ।
212. ॐ सत्याय नमः ।
213. ॐ सत्यपराक्रमाय नमः ।
214. ॐ निमिषाय नमः ।
215. ॐ अनिमिषाय नमः ।
216. ॐ स्त्रग्विणे नमः ।
217. ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः
218. ॐ अग्रण्ये नमः ।
219. ॐ ग्रामण्ये नमः ।
220. ॐ श्रीमते नमः ।
221. ॐ न्यायाय नमः ।
222. ॐ नेत्रे नमः ।
223. ॐ समीरणाय नमः ।
224. ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः ।
225. ॐ विश्वात्मने नमः ।
226. ॐ सहस्राक्षाय नमः ।
227. ॐ सहस्रपदे नमः ।
228. ॐ आवर्तनाय नमः ।
229. ॐ निवृत्तात्मने नमः ।
230. ॐ संवृताय नमः ।
231. ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः ।
232. ॐ अहःसंवर्तकाय नमः ।
233. ॐ वह्नये नमः ।
234. ॐ अनिलाय नमः ।
235. ॐ धरणीधराय नमः ।
236. ॐ सुप्रसादाय नमः ।
237. ॐ प्रसन्नात्मने नमः ।
238. ॐ विश्वधृषे नमः ।
239. ॐ विश्वभुजे नमः ।
240. ॐ विभवे नमः ।
241. ॐ सत्कर्त्रे नमः ।
242. ॐ सत्कृताय नमः ।
243. ॐ साधवे नमः ।
244. ॐ जह्नवे नमः ।
245. ॐ नारायणाय नमः ।
246. ॐ नराय नमः ।
247. ॐ असंख्येयाय नमः ।
248. ॐ अप्रमेयात्मने नमः ।
249. ॐ विशिष्टाय नमः ।
250. ॐ शिष्टकृते नमः ।
251. ॐ शुचये नमः ।
252. ॐ सिद्धार्थाय नमः ।
253. ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः ।
254. ॐ सिद्धिदाय नमः ।
255. ॐ सिद्धिसाधनाय नमः ।
256. ॐ वृषाहिने नमः ।
257. ॐ वृषभाय नमः ।
258. ॐ विष्णवे नमः ।
259. ॐ वृषपर्वणे नमः ।
260. ॐ वृषोदराय नमः ।
261. ॐ वर्धनाय नमः ।
262. ॐ वर्धमानाय नमः ।
263. ॐ विविक्ताय नमः ।
264. ॐ श्रुतिसागराय नमः ।
265. ॐ सुभुजाय नमः ।
266. ॐ दुर्धराय नमः ।
267. ॐ वाग्मिने नमः ।
268. ॐ महेन्द्राय नमः ।
269. ॐ वसुदाय नमः ।
270. ॐ वसवे नमः ।
271. ॐ नैकरूपाय नमः ।
272. ॐ बृहद्रूपाय नमः ।
273. ॐ शिपिविष्टाय नमः ।
274. ॐ प्रकाशनाय नमः ।
275. ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः ।
276. ॐ प्रकाशात्मने नमः ।
277. ॐ प्रतापनाय नमः ।
278. ॐ ऋद्धाय नमः ।
279. ॐ स्पष्टक्षराय नमः ।
280. ॐ मन्त्राय नमः ।
281. ॐ चन्द्रांशवे नमः ।
282. ॐ भास्करद्युतये नमः ।
283. ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः ।
284. ॐ भानवे नमः ।
285. ॐ शशबिन्दवे नमः ।
286. ॐ सुरेश्वराय नमः ।
287. ॐ औषधाय नमः ।
288. ॐ जगतः सेतवे नमः ।
289. ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः ।
290. ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः ।
291. ॐ पवनाय नमः ।
292. ॐ पावनाय नमः ।
293. ॐ अनलाय नमः ।
294. ॐ कामघ्ने नमः ।
295. ॐ कामकृते नमः ।
296. ॐ कान्ताय नमः ।
297. ॐ कामाय नमः ।
298. ॐ कामप्रदाय नमः ।
299. ॐ प्रभवे नमः ।
300. ॐ युगादिकृते नमः ।
301. ॐ युगावर्ताय नमः ।
302. ॐ नैकमायाय नमः ।
303. ॐ महाशनाय नमः ।
304. ॐ अदृश्याय नमः ।
305. ॐ अव्यक्तरूपाय नमः ।
306. ॐ सहस्रजिते नमः ।
307. ॐ अनन्तजिते नमः ।
308. ॐ इष्टाय नमः ।
309. ॐ अविशिष्टाय नमः ।

310. ॐ शिष्टेष्टाय नमः ।
311. ॐ शिखण्डिने नमः ।
312. ॐ नहुषाय नमः ।
313. ॐ वृषाय नमः ।
314. ॐ क्रोधघ्ने नमः ।
315. ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः ।
316. ॐ विश्वबाहवे नमः ।
317. ॐ महीधराय नमः ।
318. ॐ अच्युताय नमः ।
319. ॐ प्रथिताय नमः ।
320. ॐ प्राणाय नमः ।
321. ॐ प्राणदाय नमः ।
322. ॐ वासवानुजाय नमः ।
323. ॐ अपां निधये नमः ।
324. ॐ अधिष्ठानाय नमः ।
325. ॐ अप्रमत्ताय नमः ।
326. ॐ प्रतिष्ठिताय नमः ।
327. ॐ स्कन्दाय नमः ।
328. ॐ स्कन्दधराय नमः ।
329. ॐ धुर्याय नमः ।
330. ॐ वरदाय नमः ।
331. ॐ वायुवाहनाय नमः ।
332. ॐ वासुदेवाय नमः ।
333. ॐ बृहद्भानवे नमः ।
334. ॐ आदिदेवाय नमः ।
335. ॐ पुरन्दराय नमः ।
336. ॐ अशोकाय नमः ।
337. ॐ तारणाय नमः ।
338. ॐ ताराय नमः ।
339. ॐ शूराय नमः ।
340. ॐ शौरये नमः ।
341. ॐ जनेश्वराय नमः ।
342. ॐ अनुकूलाय नमः ।
343. ॐ शतावर्ताय नमः ।
344. ॐ पद्मिने नमः ।
345. ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः ।
346. ॐ पद्मनाभाय नमः ।
347. ॐ अरविन्दाक्षाय नमः ।
348. ॐ पद्मगर्भाय नमः ।
349. ॐ शरीरभृते नमः ।
350. ॐ महर्द्धये नमः ।
351. ॐ ऋद्धाय नमः ।
352. ॐ वृद्धात्मने नमः ।
353. ॐ महाक्षाय नमः ।
354. ॐ गरुडध्वजाय नमः ।
355. ॐ अतुलाय नमः ।
356. ॐ शरभाय नमः ।
357. ॐ भीमाय नमः ।
358. ॐ समयज्ञाय नमः ।
359. ॐ हविर्हरये नमः ।
360. ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः ।
361. ॐ लक्ष्मीवते नमः ।
362. ॐ सिमितञ्जयाय नमः ।
363. ॐ विक्षराय नमः ।
364. ॐ रोहिताय नमः ।
365. ॐ मार्गाय नमः ।
366. ॐ हेतवे नमः ।
367. ॐ दामोदराय नमः ।
368. ॐ सहाय नमः ।
369. ॐ महीधराय नमः ।
370. ॐ महाभागाय नमः ।
371. ॐ वेगवते नमः ।
372. ॐ अमिताशनाय नमः ।
373. ॐ उद्भवाय नमः ।
374. ॐ क्षोभणाय नमः ।
375. ॐ देवाय नमः ।
376. ॐ श्रीगर्भाय नमः ।
377. ॐ परमेश्वराय नमः ।
378. ॐ करणाय नमः ।
379. ॐ कारणाय नमः ।
380. ॐ कर्त्रे नमः ।
381. ॐ विकर्त्रे नमः ।
382. ॐ गहनाय नमः ।
383. ॐ गुहाय नमः ।
384. ॐ व्यवसायाय नमः ।
385. ॐ व्यवस्थानाय नमः ।
386. ॐ संस्थानाय नमः ।
387. ॐ स्थानदाय नमः ।
388. ॐ ध्रुवाय नमः ।
389. ॐ परर्द्धये नमः ।
390. ॐ परमस्पष्टाय नमः ।
391. ॐ तुष्टाय नमः ।
392. ॐ पुष्टाय नमः ।
393. ॐ शुभेक्षणाय नमः ।
394. ॐ रामाय नमः ।
395. ॐ विरामाय नमः ।
396. ॐ विरजसे नमः ।
397. ॐ मार्गाय नमः ।
398. ॐ नेयाय नमः ।
399. ॐ नयाय नमः ।
400. ॐ अनयाय नमः ।
401. ॐ वीराय नमः ।
402. ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः ।
403. ॐ धर्माय नमः ।
404. ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः ।
405. ॐ वैकुण्ठाय नमः ।
406. ॐ पुरुषाय नमः ।
407. ॐ प्राणाय नमः ।
408. ॐ प्राणदाय नमः ।
409. ॐ प्रणवाय नमः ।
410. ॐ पृथवे नमः ।
411. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ।
412. ॐ शत्रुघ्नाय नमः ।
413. ॐ व्याप्ताय नमः ।
414. ॐ वायवे नमः ।

415. ॐ अधोक्षजाय नमः ।
416. ॐ ऋतवे नमः ।
417. ॐ सुदर्शनाय नमः ।
418. ॐ कालाय नमः ।
419. ॐ परमेष्ठिने नमः ।
420. ॐ परिग्रहाय नमः ।
421. ॐ उग्राय नमः ।
422. ॐ संवत्सराय नमः ।
423. ॐ दक्षाय नमः ।
424. ॐ विश्रामाय नमः ।
425. ॐ विश्वदक्षिणाय नमः ।
426. ॐ विस्ताराय नमः ।
427. ॐ स्थावरस्थाणवे नमः ।
428. ॐ प्रमाणाय नमः ।
429. ॐ बीजायाव्ययाय नमः ।
430. ॐ अर्थाय नमः ।
431. ॐ अनर्थाय नमः ।
432. ॐ महाकोशाय नमः ।
433. ॐ महाभोगाय नमः ।
434. ॐ महाधनाय नमः ।
435. ॐ अनिर्विण्णाय नमः ।
436. ॐ स्थविष्ठाय नमः ।
437. ॐ अभुवे नमः ।
438. ॐ धर्मयूपाय नमः ।
439. ॐ महामखाय नमः ।
440. ॐ नक्षत्रनेमये नमः ।
441. ॐ नक्षत्रिणे नमः ।
442. ॐ क्षमाय नमः ।
443. ॐ क्षामाय नमः ।
444. ॐ समीहनाय नमः ।
445. ॐ यज्ञाय नमः ।
446. ॐ इज्याय नमः ।
447. ॐ महेज्याय नमः ।
448. ॐ क्रतवे नमः ।
449. ॐ सत्राय नमः ।
450. ॐ सतां गतये नमः ।
451. ॐ सर्वदर्शिने नमः ।
452. ॐ विमुक्तात्मने नमः ।
453. ॐ सर्वज्ञाय नमः ।
454. ॐ ज्ञानाय उत्तमाय नमः ।
455. ॐ सुव्रताय नमः ।
456. ॐ सुमुखाय नमः ।
457. ॐ सूक्ष्माय नमः ।
458. ॐ सुघोषाय नमः ।
459. ॐ सुखदाय नमः ।
460. ॐ सुहृदे नमः ।
461. ॐ मनोहराय नमः ।
462. ॐ जितक्रोधाय नमः ।
463. ॐ वीरबाहवे नमः ।
464. ॐ विदारणाय नमः ।
465. ॐ स्वापनाय नमः ।
466. ॐ स्ववशाय नमः ।
467. ॐ व्यापिने नमः ।
468. ॐ नैकात्मने नमः ।
469. ॐ नैककर्मकृते नमः ।
470. ॐ वत्सराय नमः ।
471. ॐ वत्सलाय नमः ।
472. ॐ वत्सिने नमः ।
473. ॐ रत्नगर्भाय नमः ।
474. ॐ धनेश्वराय नमः ।
475. ॐ धर्मगुपे नमः ।
476. ॐ धर्मकृते नमः ।
477. ॐ धर्मिणे नमः ।
478. ॐ सते नमः ।
479. ॐ असते नमः ।
480. ॐ क्षराय नमः ।
481. ॐ अक्षराय नमः ।
482. ॐ अविज्ञात्रे नमः ।
483. ॐ सहस्त्रांशवे नमः ।
484. ॐ विधात्रे नमः ।
485. ॐ कृतलक्षणाय नमः ।
486. ॐ गभस्तिनेमये नमः ।
487. ॐ सत्त्वस्थाय नमः ।
488. ॐ सिंहाय नमः ।
489. ॐ भूतमहेश्वराय नमः ।
490. ॐ आदिदेवाय नमः ।
491. ॐ महादेवाय नमः ।
492. ॐ देवेशाय नमः ।
493. ॐ देवभृद्गुरवे नमः ।
494. ॐ उत्तरस्मै नमः ।
495. ॐ गोपतये नमः ।
496. ॐ गोप्त्रे नमः ।
497. ॐ ज्ञानगम्याय नमः ।
498. ॐ पुरातनाय नमः ।
499. ॐ शरीरभूतभृते नमः ।
500. ॐ भोक्त्रे नमः ।
501. ॐ कपीन्द्राय नमः ।
502. ॐ भूरिदक्षिणाय नमः ।
503. ॐ सोमपाय नमः ।
504. ॐ अमृतपाय नमः ।
505. ॐ सोमाय नमः ।
506. ॐ पुरुजिते नमः ।
507. ॐ पुरुसत्तमाय नमः ।
508. ॐ विनयाय नमः ।
509. ॐ जयाय नमः ।
510. ॐ सत्यसंधाय नमः ।
511. ॐ दाशार्हाय नमः ।
512. ॐ सात्वतां पत्ये नमः ।
513. ॐ जीवाय नमः ।
514. ॐ विनयितासाक्षिणे नमः ।
515. ॐ मुकुन्दाय नमः ।
516. ॐ अमितविक्रमाय नमः ।
517. ॐ अम्भोनिधये नमः ।
518. ॐ अनन्तात्मने नमः ।
519. ॐ महोदधिशशाय नमः ।

520. ॐ अन्तकाय नमः ।
521. ॐ अजाय नमः ।
522. ॐ महार्हाय नमः ।
523. ॐ स्वाभाव्याय नमः ।
524. ॐ जितमित्राय नमः ।
525. ॐ प्रमोदनाय नमः ।
526. ॐ आनन्दाय नमः ।
527. ॐ नन्दनाय नमः ।
528. ॐ नन्दाय नमः ।
529. ॐ सत्यधर्माय नमः ।
530. ॐ त्रिविक्रमाय नमः ।
531. ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः
532. ॐ कृतज्ञाय नमः ।
533. ॐ मेदिनीपतये नमः ।
534. ॐ त्रिपदाय नमः ।
535. ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः ।
536. ॐ महाश्रृङ्गाय नमः ।
537. ॐ कृतान्तकृते नमः ।
538. ॐ महावराहाय नमः ।
539. ॐ गोविन्दाय नमः ।
540. ॐ सुषेणाय नमः ।
541. ॐ कनकाङ्गदिने नमः ।
542. ॐ गुह्याय नमः ।
543. ॐ गभीराय नमः ।
544. ॐ गहनाय नमः ।
545. ॐ गुप्ताय नमः ।
546. ॐ चक्रगदाधराय नमः ।
547. ॐ वेधसे नमः ।
548. ॐ स्वाङ्गाय नमः ।
549. ॐ अजिताय नमः ।
550. ॐ कृष्णाय नमः ।
551. ॐ दृढाय नमः ।
552. ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः
553. ॐ वरुणाय नमः ।
554. ॐ वारुणाय नमः ।
555. ॐ वृक्षाय नमः ।
556. ॐ पुष्कराक्षाय नमः ।
557. ॐ महामनसे नमः ।
558. ॐ भगवते नमः ।
559. ॐ भगघ्ने नमः ।
560. ॐ आनन्दिने नमः ।
561. ॐ वनमालिने नमः ।
562. ॐ हलायुधाय नमः ।
563. ॐ आदित्याय नमः ।
564. ॐ ज्योतिरदित्याय नमः ।
565. ॐ सहिष्णवे नमः ।
566. ॐ गतिसत्तमाय नमः ।
567. ॐ सुधन्वने नमः ।
568. ॐ खण्डपरशवे नमः ।
569. ॐ दारुणाय नमः ।
570. ॐ द्रविणप्रदाय नमः ।
571. ॐ दिविस्पृशे नमः ।
572. ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः ।
573. ॐ वाचस्पतये अयोनिजाय नमः
574. ॐ त्रिसाम्ने नमः ।
575. ॐ सामगाय नमः ।
576. ॐ साम्ने नमः ।
577. ॐ निर्वाणाय नमः ।
578. ॐ भेषजाय नमः ।
579. ॐ भिषजे नमः ।
580. ॐ संन्यासकृते नमः ।
581. ॐ शमाय नमः ।
582. ॐ शान्ताय नमः ।
583. ॐ निष्ठायै नमः ।
584. ॐ शान्त्यै नमः ।
585. ॐ परायणाय नमः ।
586. ॐ शुभाङ्गाय नमः ।
587. ॐ शान्तिदाय नमः ।
588. ॐ स्त्रष्ट्रे नमः ।
589. ॐ कुमुदाय नमः ।
590. ॐ कुवलेशयाय नमः ।
591. ॐ गोहिताय नमः ।
592. ॐ गोपतये नमः ।
593. ॐ गोप्त्रे नमः ।
594. ॐ वृषभाक्षाय नमः ।
595. ॐ वृषप्रियाय नमः ।
596. ॐ अनिवर्तिने नमः ।
597. ॐ निवृत्तात्मने नमः ।
598. ॐ संक्षेप्त्रे नमः ।
599. ॐ क्षेमकृते नमः ।
600. ॐ शिवाय नमः ।
601. ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः ।
602. ॐ श्रीवासाय नमः ।
603. ॐ श्रीपतये नमः ।
604. ॐ श्रीमतां वराय नमः ।
605. ॐ श्रीदाय नमः ।
606. ॐ श्रीशाय नमः ।
607. ॐ श्रीनिवासाय नमः ।
608. ॐ श्रीनिधये नमः ।
609. ॐ श्रीविभावनाय नमः ।
610. ॐ श्रीधराय नमः ।
611. ॐ श्रीकराय नमः ।
612. ॐ श्रेयसे नमः ।
613. ॐ श्रीमते नमः ।
614. ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः ।
615. ॐ स्वक्षाय नमः ।
616. ॐ स्वङ्गाय नमः ।
617. ॐ शतानन्दाय नमः ।
618. ॐ नन्दिने नमः ।
619. ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः ।
620. ॐ विजितात्मने नमः ।
621. ॐ अविधेयात्मने नमः ।
622. ॐ सत्कीर्तये नमः ।
623. ॐ छिन्नसंशयाय नमः ।
624. ॐ उदीर्णाय नमः ।

625. ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः ।
626. ॐ अनीशाय नमः ।
627. ॐ शाश्वतस्थिराय नमः ।
628. ॐ भूशयाय नमः ।
629. ॐ भूषणाय नमः ।
630. ॐ भूतये नमः ।
631. ॐ विशोकाय नमः ।
632. ॐ शोकनाशनाय नमः ।
633. ॐ अर्चिष्मते नमः ।
634. ॐ अर्चिताय नमः ।
635. ॐ कुम्भाय नमः ।
636. ॐ विशुद्धात्मने नमः ।
637. ॐ विशोधनाय नमः ।
638. ॐ अनिरुद्धाय नमः ।
639. ॐ अप्रतिरथाय नमः ।
640. ॐ प्रद्युम्नाय नमः ।
641. ॐ अमितविक्रमाय नमः ।
642. ॐ कालनेमिघ्ने नमः ।
643. ॐ वीराय नमः ।
644. ॐ शौरये नमः ।
645. ॐ शूरजनेश्वराय नमः ।
646. ॐ त्रिलोकात्मने नमः ।
647. ॐ त्रिलोकेशाय नमः ।
648. ॐ केशवाय नमः ।
649. ॐ केशिघ्ने नमः ।
650. ॐ हरये नमः ।
651. ॐ कामदेवाय नमः ।
652. ॐ कामपालाय नमः ।
653. ॐ कामिने नमः ।
654. ॐ कान्ताय नमः ।
655. ॐ कृतागमाय नमः ।
656. ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः ।
657. ॐ विष्णवे नमः ।
658. ॐ वीराय नमः ।
659. ॐ अनन्ताय नमः ।
660. ॐ धनंजयाय नमः ।
661. ॐ ब्रह्मण्याय नमः ।
662. ॐ ब्रह्मकृते नमः ।
663. ॐ ब्रह्मणे नमः ।
664. ॐ ब्रह्मणे नमः ।
665. ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः ।
666. ॐ ब्रह्मविदे नमः ।
667. ॐ ब्राह्मणाय नमः ।
668. ॐ ब्रह्मिणे नमः ।
669. ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः ।
670. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः ।
671. ॐ महाक्रमाय नमः ।
672. ॐ महाकर्मणे नमः ।
673. ॐ महातेजसे नमः ।
674. ॐ महोरगाय नमः ।
675. ॐ महाक्रतवे नमः ।
676. ॐ महायज्वने नमः ।
677. ॐ महायज्ञाय नमः ।
678. ॐ महाहविषे नमः ।
679. ॐ स्तव्याय नमः ।
680. ॐ स्तवप्रियाय नमः ।
681. ॐ स्तोत्राय नमः ।
682. ॐ स्तुतये नमः ।
683. ॐ स्तोत्रे नमः ।
684. ॐ रणप्रियाय नमः ।
685. ॐ पूर्णाय नमः ।
686. ॐ पूरयित्रे नमः ।
687. ॐ पुण्याय नमः ।
688. ॐ पुण्यकीर्तये नमः ।
689. ॐ अनामयाय नमः ।
690. ॐ मनोजवाय नमः ।
691. ॐ तीर्थंकराय नमः ।
692. ॐ वसुरेतसे नमः ।
693. ॐ वसुप्रदाय नमः ।
694. ॐ वसुप्रदाय नमः ।
695. ॐ वासुदेवाय नमः ।
696. ॐ वसवे नमः ।
697. ॐ वसुमनसे नमः ।
698. ॐ हविषे नमः ।
699. ॐ सद्गतये नमः ।
700. ॐ सत्कृतये नमः ।
701. ॐ सत्तायै नमः ।
702. ॐ सद्भूतये नमः ।
703. ॐ सत्परायणाय नमः ।
704. ॐ शूरसेनाय नमः ।
705. ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः ।
706. ॐ सन्निवासाय नमः ।
707. ॐ सुयामुनाय नमः ।
708. ॐ भूतावासाय नमः ।
709. ॐ वासुदेवाय नमः ।
710. ॐ सर्वासुनिलयाय नमः ।
711. ॐ अनलाय नमः ।
712. ॐ दर्पघ्ने नमः ।
713. ॐ दर्पदाय नमः ।
714. ॐ दृप्ताय नमः ।
715. ॐ दुर्धराय नमः ।
716. ॐ अपराजिताय नमः ।
717. ॐ विश्वमूर्तये नमः ।
718. ॐ महामूर्तये नमः ।
719. ॐ दीप्तमूर्तये नमः ।
720. ॐ अमूर्तिमते नमः ।
721. ॐ अनेकमूर्तये नमः ।
722. ॐ अव्यक्ताय नमः ।
723. ॐ शतमूर्तये नमः ।
724. ॐ शताननाय नमः ।
725. ॐ एकस्मै नमः ।
726. ॐ नैकाय नमः ।
727. ॐ सवाय नमः ।
728. ॐ काय नमः ।
729. ॐ कस्मै नमः ।

730. ॐ यस्मै नमः ।
731. ॐ तस्मै नमः ।
732. ॐ पदायानुत्तमाय नमः ।
733. ॐ लोकबन्धवे नमः ।
734. ॐ लोकनाथाय नमः ।
735. ॐ माधवाय नमः ।
736. ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।
737. ॐ सुवर्णवर्णाय नमः ।
738. ॐ हेमाङ्गाय नमः ।
739. ॐ वराङ्गाय नमः ।
740. ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः ।
741. ॐ वीरघ्ने नमः ।
742. ॐ विषमाय नमः ।
743. ॐ शून्याय नमः ।
744. ॐ घृताशिषे नमः ।
745. ॐ अचलाय नमः ।
746. ॐ चलाय नमः ।
747. ॐ अमानिने नमः ।
748. ॐ मानदाय नमः ।
749. ॐ मान्याय नमः ।
750. ॐ लोकस्वामिने नमः ।
751. ॐ त्रिलोकधृषे नमः ।
752. ॐ सुमेधसे नमः ।
753. ॐ मेधजाय नमः ।
754. ॐ धन्याय नमः ।
755. ॐ सत्यमेधसे नमः ।
756. ॐ धराधराय नमः ।
757. ॐ तेजोवृषाय नमः ।
758. ॐ द्युतिधराय नमः ।
759. ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः ।
760. ॐ प्रग्रहाय नमः ।
761. ॐ निग्रहाय नमः ।
762. ॐ व्यग्राय नमः ।
763. ॐ नैकश्रृङ्गाय नमः ।
764. ॐ गदाग्रजाय नमः ।
765. ॐ चतुर्मूर्तये नमः ।
766. ॐ चतुर्बाहवे नमः ।
767. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः ।
768. ॐ चतुर्गतये नमः ।
769. ॐ चतुरात्मने नमः ।
770. ॐ चतुर्भावाय नमः ।
771. ॐ चतुर्वेदविदे नमः ।
772. ॐ एकपदे नमः ।
773. ॐ समावर्ताय नमः ।
774. ॐ अनिवृत्तत्मने नमः ।
775. ॐ दुर्जयाय नमः ।
776. ॐ दुरितक्रमाय नमः ।
777. ॐ दुर्लभाय नमः ।
778. ॐ दुर्गमाय नमः ।
779. ॐ दुर्गाय नमः ।
780. ॐ दुरावासाय नमः ।
781. ॐ दुरारिघ्ने नमः ।
782. ॐ शुभाङ्गाय नमः ।
783. ॐ लोकसारङ्गाय नमः ।
784. ॐ सुतन्तवे नमः ।
785. ॐ तन्तुवर्धनाय नमः ।
786. ॐ इन्द्रकर्मणे नमः ।
787. ॐ महाकर्मणे नमः ।
788. ॐ कृतकर्मणे नमः ।
789. ॐ कृतागमाय नमः ।
790. ॐ उद्भवाय नमः ।
791. ॐ सुन्दराय नमः ।
792. ॐ सुन्दाय नमः ।
793. ॐ रत्ननाभाय नमः ।
794. ॐ सुलोचनाय नमः ।
795. ॐ अर्काय नमः ।
796. ॐ वाजसनाय नमः ।
797. ॐ श्रृङ्गिणे नमः ।
798. ॐ जयन्ताय नमः ।
799. ॐ सर्वविज्जयिने नमः ।
800. ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः ।
801. ॐ अक्षोभ्याय नमः ।
802. ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः ।
803. ॐ महाह्रदाय नमः ।
804. ॐ महागर्ताय नमः ।
805. ॐ महाभूताय नमः ।
806. ॐ महानिधये नमः ।
807. ॐ कुमुदाय नमः ।
808. ॐ कुन्दराय नमः ।
809. ॐ कुन्दाय नमः ।
810. ॐ पर्जन्याय नमः ।
811. ॐ पावनाय नमः ।
812. ॐ अनिलाय नमः ।
813. ॐ अमृताशाय नमः ।
814. ॐ अमृतवपुषे नमः ।
815. ॐ सर्वज्ञाय नमः ।
816. ॐ सर्वतोमुखाय नमः ।
817. ॐ सुलभाय नमः ।
818. ॐ सुव्रताय नमः ।
819. ॐ सिद्धाय नमः ।
820. ॐ शत्रुजिते नमः ।
821. ॐ शत्रुतापनाय नमः ।
822. ॐ न्यग्रोधाय नमः ।
823. ॐ उदुम्बराय नमः ।
824. ॐ अश्वत्थाय नमः ।
825. ॐ चाणूरन्ध्रनिषूदनाय नमः ।
826. ॐ सहस्त्रार्चिषे नमः ।
827. ॐ सप्तजिह्वाय नमः ।
828. ॐ सप्तैधसे नमः ।
829. ॐ सप्तवाहनाय नमः ।
830. ॐ अमूर्तये नमः ।
831. ॐ अनघाय नमः ।
832. ॐ अचिन्त्याय नमः ।
833. ॐ भयकृते नमः ।
834. ॐ भयनाशनाय नमः ।

835. ॐ अणवे नमः ।
836. ॐ बृहते नमः ।
837. ॐ कृशाय नमः ।
838. ॐ स्थूलाय नमः ।
839. ॐ गुणभृते नमः ।
840. ॐ निर्गुणाय नमः ।
841. ॐ महते नमः ।
842. ॐ अधृताय नमः ।
843. ॐ स्वधृताय नमः ।
844. ॐ स्वास्याय नमः ।
845. ॐ प्राग्वंशाय नमः ।
846. ॐ वंशवर्धनाय नमः ।
847. ॐ भारभृते नमः ।
848. ॐ कथिताय नमः ।
849. ॐ योगिने नमः ।
850. ॐ योगीशाय नमः ।
851. ॐ सर्वकामदाय नमः ।
852. ॐ आश्रमाय नमः ।
853. ॐ श्रमणाय नमः ।
854. ॐ क्षामाय नमः ।
855. ॐ सुपर्णाय नमः ।
856. ॐ वायुवाहनाय नमः ।
857. ॐ धनुर्धराय नमः ।
858. ॐ धनुर्वेदाय नमः ।
859. ॐ दण्डाय नमः ।
860. ॐ दमयित्रे नमः ।
861. ॐ दमाय नमः ।
862. ॐ अपराजिताय नमः ।
863. ॐ सर्वसहाय नमः ।
864. ॐ नियन्त्रे नमः ।
865. ॐ अनियमाय नमः ।
866. ॐ अयमाय नमः ।
867. ॐ सत्त्ववते नमः ।
868. ॐ सात्त्विकाय नमः ।
869. ॐ सत्याय नमः ।
870. ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः ।
871. ॐ अभिप्रायाय नमः ।
872. ॐ प्रियार्हाय नमः ।
873. ॐ अर्हाय नमः ।
874. ॐ प्रियकृते नमः ।
875. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः ।
876. ॐ विहायसगतये नमः ।
877. ॐ ज्योतिषे नमः ।
878. ॐ सुरुचये नमः ।
879. ॐ हुतभुजे नमः ।
880. ॐ विभवे नमः ।
881. ॐ रवये नमः ।
882. ॐ विरोचनाय नमः ।
883. ॐ सूर्याय नमः ।
884. ॐ सवित्रे नमः ।
885. ॐ रविलोचनाय नमः ।
886. ॐ अनन्ताय नमः ।
887. ॐ हुतभुजे नमः ।
888. ॐ भोक्त्रे नमः ।
889. ॐ सुखदाय नमः ।
890. ॐ नैकजाय नमः ।
891. ॐ अग्रजाय नमः ।
892. ॐ अनिर्विण्णाय नमः ।
893. ॐ सदामर्षिणे नमः ।
894. ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः ।
895. ॐ अद्भुताय नमः ।
896. ॐ सनाते नमः ।
897. ॐ सनातनतमाय नमः ।
898. ॐ कपिलाय नमः ।
899. ॐ कपये नमः ।
900. ॐ अप्ययाय नमः ।
901. ॐ स्वस्तिदाय नमः ।
902. ॐ स्वस्तिकृते नमः ।
903. ॐ स्वस्तये नमः ।
904. ॐ स्वस्तिभुजे नमः ।
905. ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः ।
906. ॐ अरौद्राय नमः ।
907. ॐ कुण्डलिने नमः ।
908. ॐ चक्रिणे नमः ।
909. ॐ विक्रमिणे नमः ।
910. ॐ ऊर्जितशासनाय नमः ।
911. ॐ शब्दातिगाय नमः ।
912. ॐ शब्दसहाय नमः ।
913. ॐ शिशिराय नमः ।
914. ॐ शर्वरीकराय नमः ।
915. ॐ अक्रूराय नमः ।
916. ॐ पेशलाय नमः ।
917. ॐ दक्षाय नमः ।
918. ॐ दक्षिणस्यै नमः ।
919. ॐ क्षमिणां वराय नमः ।
920. ॐ विद्वत्तमाय नमः ।
921. ॐ वीतभयाय नमः ।
922. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः ।
923. ॐ उत्तारणाय नमः ।
924. ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः ।
925. ॐ पुण्याय नमः ।
926. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः ।
927. ॐ वीरघ्ने नमः ।
928. ॐ रक्षणाय नमः ।
929. ॐ सद्भ्यो नमः ।
930. ॐ जीवनाय नमः ।
931. ॐ पर्यवस्थिताय नमः ।
932. ॐ अनन्तरूपाय नमः ।
933. ॐ अनन्तश्रिये नमः ।
934. ॐ जितमन्यवे नमः ।
935. ॐ भयापहाय नमः ।
936. ॐ चतुरस्राय नमः ।
937. ॐ गभीरात्मने नमः ।
938. ॐ विदिशाय नमः ।
939. ॐ व्यादिशाय नमः ।

940. ॐ दिशाय नमः ।
941. ॐ अनादये नमः ।
942. ॐ भूर्भुवे नमः ।
943. ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
944. ॐ सुवीराय नमः ।
945. ॐ रुचिराङ्गदाय नमः ।
946. ॐ जननाय नमः ।
947. ॐ जनजन्मादये नमः ।
948. ॐ भीमाय नमः ।
949. ॐ भीमपराक्रमाय नमः ।
950. ॐ आधारनिलयाय नमः ।
951. ॐ अधात्रे नमः ।
952. ॐ पुष्पहासाय नमः ।
953. ॐ प्रजागराय नमः ।
954. ॐ ऊर्ध्वगाय नमः ।
955. ॐ सत्पथाचाराय नमः ।
956. ॐ प्राणदाय नमः ।
957. ॐ प्रणवाय नमः ।
958. ॐ पणाय नमः ।
959. ॐ प्रमाणाय नमः ।
960. ॐ प्राणनिलयाय नमः ।
961. ॐ प्राणभृते नमः ।
962. ॐ प्राणजीवनाय नमः ।
963. ॐ तत्त्वाय नमः ।
964. ॐ तत्त्वविदे नमः ।
965. ॐ एकात्मने नमः ।
966. ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः ।
967. ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः ।
968. ॐ ताराय नमः ।
969. ॐ सवित्रे नमः ।
970. ॐ प्रपितामहाय नमः ।
971. ॐ यज्ञाय नमः ।
972. ॐ यज्ञपतये नमः ।
973. ॐ यज्वने नमः ।
974. ॐ यज्ञाङ्गाय नमः ।
975. ॐ यज्ञवाहनाय नमः ।
976. ॐ यज्ञभृते नमः ।
977. ॐ यज्ञकृते नमः ।
978. ॐ यज्ञिने नमः ।
979. ॐ यज्ञभुजे नमः ।
980. ॐ यज्ञसाधनाय नमः ।
981. ॐ यज्ञान्तकृते नमः ।
982. ॐ यज्ञगुह्याय नमः ।
983. ॐ अन्नाय नमः ।
984. ॐ अन्नादाय नमः ।
985. ॐ आत्मयोनये नमः ।
986. ॐ स्वयंजाताय नमः ।
987. ॐ वैखानाय नमः ।
988. ॐ सामगायनाय नमः ।
989. ॐ देवकीनन्दनाय नमः ।
990. ॐ स्रष्ट्रे नमः ।
991. ॐ क्षितीशाय नमः ।
992. ॐ पापनाशनाय नमः ।
993. ॐ शङ्खभृते नमः ।
994. ॐ नन्दकिने नमः ।
995. ॐ चक्रिणे नमः ।
996. ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः ।
997. ॐ गदाधराय नमः ।
998. ॐ रथाङ्गपाणये नमः ।
999. ॐ अक्षोभ्याय नमः ।
1000. ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः ।

॥ इति श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि श्रीविष्णुसहस्रनामवलिः सम्पूर्णा ॥

॥ जगदीश जी की आरती ॥

- ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
  भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ॥ १॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
  सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥ ॥ २॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
  तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ३॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी ।
  पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॥ ४॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
  मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॥ ५॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
  किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ६॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
  अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॥ ७॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
  श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॥ ८॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- तन-मन-धन, सब कुछ है तेरा ।
  तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॥ ९॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।
- श्याम सुंदर जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
  कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥१०॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

॥ आरती श्री नरसिंह भगवान की ॥

- **ॐ जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।**
  स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, जन का ताप हरे ॥ १ ॥
  ॐ जय नरसिंह हरे ..... ।

- **तुम हो दीन दयाला, भक्तन हितकारी, प्रभु भक्तन हितकारी।**
  अद्भुत रूप बनाकर, अद्भुत रूप बनाकर, प्रकटे भय हारी ॥ ॥ २ ॥
  ॐ जय नरसिंह हरे ..... ।

- **सबके हृदय विदारण, दुस्यु जियो मारी, प्रभु दुस्यु जियो मारी।**
  दास जान अपनायो, दास जान अपनायो, जन पर कृपा करी ॥ ॥ ३ ॥
  ॐ जय नरसिंह हरे ..... ।

- **ब्रह्मा करत आरती, माला पहिनावे, प्रभु माला पहिनावे।**
  शिवजी जय जय कहकर, पुष्पन बरसावे ॥ ॥ ४ ॥
  ॐ जय नरसिंह हरे ..... ।

॥ इति आरती श्री नरसिंह भगवान सम्पूर्णम ॥

॥ भागवत पुराण जी की आरती ॥

- आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- महा पुराण भागवत निर्मल,
  शुक-मुख-विगलित निगम कल्प कल ।
  परमानंद सुधा-रसमय फल,
  लीला रति यह रस निधान की ॥ ॥१॥
  आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणी,
  जन्म-मृत्यु भव-भय हारिणी ॥
  सेवत संत सकल सुख कारिणी,
  महौषधि हरि-चरित्र गान की ॥ ॥२॥
  आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- विषय विलास विमोह विनाशिनी,
  विमल विराग विवेक विकासिनी ॥
  भगवत-तत्व-रहस्य-विकासिनी,
  परम ज्योति परमात्म ज्ञान की ॥ ॥३॥
  आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- परमहंस-मुनि मन उल्लासिनी,
  रसिक हृदय रस रास-विलासिनी ॥
  भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम सुदासिनी,
  कथा अकिंचन-प्रिय सुजान की ॥ ॥४॥
  आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

॥ श्री सत्यनारायण जी की आरती ॥

- ॐ जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा ।
  सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥ ॥ १॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- रत्नजडित सिंहासन , अद्भुत छवि राजें ।
  नारद करत निरंजन, घंटा ध्वनी बाजें ॥ ॥ २॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो ।
  बूढों ब्राम्हण बनके, कंचन महल कियों ॥ ॥ ३॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी ।
  च्रंदचूड एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी ॥ ॥ ४॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- वैश्य मनोरथ पायों, श्रद्धा तज दिन्ही ।
  सो फल भोग्यों प्रभूजी, फिर स्तुति किन्ही ॥ ५॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- भाव भक्ति के कारन, छिण-छिण रुप धरयो ।
  श्रद्धा धारण किन्ही, तिनको काज सरयो ॥ ॥ ६॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करि ।
  मनवांछित फल दिन्हो, दीन दयाल हरि ॥ ॥ ७॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- चढत प्रसाद सवायों, कदली फल मेवा ।
  धूप दीप तुलसी से, राजी सत्य देवा ॥ ॥ ८॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।
- सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
  भणत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ९॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी .... ।

॥ इति आरती श्री सत्यानारयण जी सम्पूर्णम ॥